प्रशिक्षण मॉड्यूल

जेंडर और जलवायु परिवर्तन में अंर्तसम्बद्ध

खाद्य, स्वास्थ्य, पोषण तथा आर्थिक समावेशन पर प्रभाव

मास्टर प्रशिक्षकों हेतु

झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी,
ग्रामीण विकास विभाग, झारखंड सरकार

प्रशिक्षण मॉड्यूल

जेंडर और जलवायु परिवर्तन में अंतर्सम्बद्ध

खाद्य, स्वास्थ्य, पोषण तथा आर्थिक समावेशन पर प्रभाव

मास्टर प्रशिक्षकों हेतु

झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी,
ग्रामीण विकास विभाग, झारखंड सरकार

तकनीकी सहयोगः
चाइल्ड इन नीड इंस्टिट्यूट (CINI) और असर सोशल इम्पैक्ट एडवाइजर (Asar)

विषय-सूची

	परिचय	7
	उद्देश्य	7
	लक्ष्य समूह	7
	मॉड्यूल की संरचना	8
सत्र 1	परिचय और संदर्भ	10
सत्र 2	जलवायु परिवर्तन तथा इसके प्रभाव	14
सत्र 3	जलवायु परिवर्तन के खतरे एवं जेंडर असमानता	28
सत्र 4	जलवायु परिवर्तन का महिलाओं के खाद्य, स्वास्थ्य, पोषण आदि पर प्रभाव तथा सामुदायिक संगठनों का प्रयास	42
सत्र 5	जलवायु परिवर्तन एवं पारिवारिक हिंसा एवं सरकारी योजनाएँ	46
सत्र 6	जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए स्थानीय कार्य योजना	57

परिचय

जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय में एक वैश्विक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया है। विश्व के सभी विकासशील देश इससे प्रभावित हो रहे हैं तथा इससे खतरे की स्थिति पैदा हो रही है। जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभावों से जेंडर असमानता में भी वृद्धि हो रही है।

फलस्वरूप महिलाओं को स्वास्थ्य, पोषण व आर्थिक समावेशन में कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। उपलब्ध संसाधनों तक सीमित पहुंच, सीमित अधिकार, प्रतिबंधित आवागमन, निर्णय लेने में सीमित भागीदारी तथा जलवायु परिवर्तन का प्रभाव महिलाओं को पुरूषों की तुलना में अति संवेदनशील बनाता है।

इस वैश्विक चुनौती को कम करने में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जलवायु परिवर्तन होने वाले प्रतिकूल प्रभाव तथा इससे उत्पन्न चुनौतियों के बारे में स्वयं जागरूक होने के साथ–साथ समुदाय को जागरूक करने तथा इसके स्थानीय स्तर पर प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

उद्देश्य

झारखण्ड राज्य आजीविका प्रमोशन सोसाईटी (जे.एस.एल.पी.एस.) से जुड़ी दीदियां राज्य में कई परिवर्तन की सूत्रधार बन रही हैं। जलवायु परिवर्तन जैसे संवेदनशील मुद्दों पर उनकी समझ बनाने, स्थानीय चुनौतियों की त्वरित पहचान कर तद्नुरूप रणनीति निर्माण में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए समिति से जुड़ी सेतु दीदियों के लिए इस मॉडयूल का विकास किया गया है। मुख्य प्रशिक्षक के रूप में राज्य में सेतु दीदीयों को प्रशिक्षित करने को लक्षित इस मॉड्यूल के निम्नलिखित उददेश्य हैः

1. जलवायु परिवर्तन तथा जेंडर के बीच संबंधों तथा इससे होने वाले प्रभावों तथा जेंडर असमानता विषय पर समझ बनाना।
2. जलवायु परिवर्तन के कारण खाद्य, स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता तथा आर्थिक समावेशन में होने वाले चुनौतियों की समझ बनाना।
3. जलवायु परिवर्तन से होने वाले चुनौतियों तथा इसके प्रभावों को कम करने और स्थानीय स्तर पर उनके समाधान हेतु कार्ययोजना बनाकर उसके क्रियान्वयन करने हेतु महिलाओं में नेतृत्व की क्षमता विकसित करना।

लक्ष्य समूह

1 जे.एस.एल.पी.एस. के साथ काम करने वाली सेतु दीदी (मास्टर ट्रेनर)

2 झारखंड स्थित स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं

मॉड्यूल की संरचना

प्रशिक्षणार्थियो को सक्रिय प्रतिभागिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से इस मॉड्यूल में कई रोचक गतिविधियाँ यथा कहानियाँ, केस स्टडी आदि का समावेश किया गया है जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभाव जैसे संवेदनशील मुद्दे पर समुदाय में लोगों की समझ विकसित करने एवं स्थानीय स्तर पर इसके निराकरण की रणनीति तैयार कर उसके क्रियान्वयन की पहल सुनिश्चित कराने की जिम्मेदारी का निर्वहन सेतु दीदी से अपेक्षित है, अतः पूरे मॉड्यूल में विभिन्न विषयों को समझाने हेतु रोचक तरीके का समावेश किया गया है। ताकि वे आसानी से विभिन्न सामुदायिक मंचों पर इस विषय पर चर्चा कर सकें।

इस मुद्दे के स्थानीय प्रभाव को स्वयं चिन्हित कर उससे उत्पन्न चुनौतियों को दूर करने हेतु महिलाओं द्वारा कार्ययोजना निर्माण के लक्ष्य से इसमें विभिन्न सहभागी प्रक्रियाओं का समावेश किया गया है। मॉड्यूल विकास के क्रम में प्रत्येक सत्र में एकरूपता रखते हुए इसमें अवलोकन, उद्देश्य, आवश्यक सामग्री, आगामी कार्ययोजना आदि को शामिल किया गया है। विषयानुरूप गतिविधियों यथा अभ्यास पत्र, केस स्टडी, कहानी, समूह कार्य, आदि का समावेश कर रोचक एवं सहभागिता से संबंधित विषय पर जानकारी देने का प्रयास किया गया है। इस दो दिवसीय प्रशिक्षण मॉड्यूल में विभिन्न सत्रों पर प्रतिभागियों को प्रशिक्षित करने के लिए अनुमानतः 10 घंटे का समय निर्धारित किया गया है।

क्षेत्रीय एवं सामुदायिक स्तर पर जलवायु व पर्यावरण संरक्षण हेतु पहल तथा इससे होने वाले प्रभावों की रोकथाम व प्रबंधन को लक्षित इस मॉड्यूल के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के जेंडर दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए लोगों की इस विषय पर समझ विकसित कर इसे उनकी प्राथमिकताओं में शामिल करने की पहल की जा रही है।

उम्मीद है कि इस मॉड्यूल के माध्यम से सेतु दीदियों की क्षमता संवर्द्धन कर हम झारखण्ड राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर चर्चा प्रारंभ कर आमजन के बीच उसके लैगिंक दृष्टिकोण को स्पष्ट करने तथा उसके स्थानीय प्रबंधन की प्रक्रिया विकसित करने में कारगर होंगे।

झारखण्ड राज्य आजीविका प्रमोशन सोसाईटी (जे.एस.एल.पी.एस.) के अन्तर्गत सेतु दीदी संकुल आधारित स्वैच्छिक सामुदायिक कैडर है जो सरकार और ग्रामीण समुदाय के बीच एक कड़ी का काम करती है। स्थानीय स्तर पर खाद्य, स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता और अन्य क्षेत्र विशेष के गंभीर मुद्दों पर आमजनों की जागरूकता बढ़ाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जलवायु परिवर्तन दिन–व–दिन एक गंभीर चुनौती के रूप में सामने आ रहा है, जिससे ना सिर्फ लैगिंक असमानता बढ़ रही है बल्कि लोगों के स्वास्थ्य, पोषण, एवं आजीविका पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है। अतः सेतु दीदी के माध्यम के इस विषय पर स्थानीय स्तर के समझ बढ़ाने के उददेश्य से सेतु दीदीयों को प्रशिक्षित करने हेतु प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया गया है।

दिन 1	
सत्र 0	परिचय और संदर्भ
सत्र 1	जलवायु परिवर्तन तथा इसके प्रभाव
सत्र 2	जलवायु परिवर्तन के खतरे एवं जेंडर असमानता
सत्र 3	जलवायु परिवर्तन का महिलाओं के खाद्य, स्वास्थ्य, पोषण आदि पर प्रभाव तथा सामुदायिक संगठनों का प्रयास

दिन 2	
सत्र 4	जलवायु परिवर्तन एवं पारिवारिक हिंसा एवं सरकारी योजनाएँ
सत्र 5	जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए स्थानीय कार्य योजना

परिचय और संदर्भ

सत्र 1

उद्देश्य

1. प्रतिभागियों को इस मॉड्यूल के उद्देश्यों और संदर्भ को समझाना, ताकि वे इसमें भाग ले सकें और बेहतर तरीके से सीख सकें।
2. प्रतिभागी की सक्रियता बढ़ाकर उन्हें परस्पर तालमेल स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना

अवधि

1.5 घंटे

आवश्यक सामग्री

गतिविधि शीट 1 की प्रतिलिपियां, व्हाइट बोर्ड और मार्कर, स्मार्ट फोन एवं स्पीकर

रूपरेखा

अवधि	गतिविधियां
20 मिनट	आइस ब्रेकिंग गतिविधि
10 मिनट	परिचय
30 मिनट	संदर्भ
30 मिनट	मॉड्यूल और इसके उद्देश्यों के विषय पर चर्चा

गतिविधि 1

1. सभी प्रतिभागियों को गोलाकार में खड़े होने के लिए कहें।
2. उन्हें कमरे में इच्छानुसार चलने के लिए कहें। वे अन्य प्रतिभागियों की ओर देखकर और आँख से आँख मिलाकर मुस्कुरा सकते हैं, लेकिन बात नहीं कर सकते। (कम आवाज़ में संगीत बजाएं)
3. जब संगीत बंद हो जाए, तो उन्हें अपने पास के अन्य प्रतिभागी को ढूँढना होगा और पीठ–से–पीठ मिलाकर खड़े होना होगा।
4. अब, उन्हें अपने साथी प्रतिभागी की ओर मुड़ने के लिए कहें। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति को अपना नाम, जिला और अपनी एक रूचि के विषय में बताने के लिए 2 मिनट (कुल 4 मिनट) का समय दिया जाएगा।

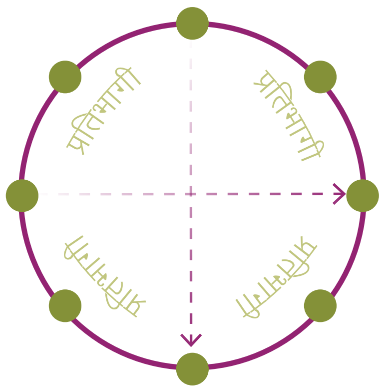

5. यदि आपसी परिचय को वे 4 मिनट से पहले समाप्त कर देते हैं, तो उन्हें फिर से पीठ–से –पीठ मिलाकर खड़े होने के लिए कहें।
6. प्रतिभागियों को कमरे में अपनी पसंद की दिशा में फिर से चलना शुरू करने के लिए कहें। वे अन्य प्रतिभागियों की ओर आँख से आँख मिलाकर मुस्कुरा सकते हैं, लेकिन बात नहीं कर सकते।
7. जब संगीत बंद हो जाए तो प्रतिभागियों को पीठ से पीठ मिलाकर खड़े होना होगा।
8. अब, जब प्रतिभागी एक–दूसरे की ओर मुड़ेंगे, तो उनमें से प्रत्येक को अपना पसंदीदा भोजन और पसंद करने का कारण बताने के लिए 2 मिनट (कुल 4 मिनट) का समय दिया जाएगा।
9. यही प्रक्रिया फिर से दोहराएं और इस बार प्रतिभागियों को 4 का समूह बनाने को कहें।
10. प्रत्येक प्रतिभागी से कहें कि वे अपने समूह के सदस्यों के साथ पिछले 2 वर्षों में जलवायु में आए एक बदलाव को साझा करें। (5 मिनट)
11. सभी प्रतिभगियों की गतिविधि में भाग लेने के लिए सराहना करें। इसके बाद प्रतिभागियों को अपने–अपने स्थान पर बैठने के लिए कहें।

गतिविधि 2

1. सहजकर्ता– प्रतिभागियों से चर्चा करेंगे कि पिछली गतिविधि में हमने एक–दूसरे को जाना तथा साथ–ही–साथ, जलवायु में होने वाले बदलावों के बारे में भी लोगों को बतलाया।
2. सहजकर्ता– ''क्या आपको इस बारे में कोई जानकारी है कि हम अगामी 2 दिनों में क्या सीखने जा रहे हैं?''
3. कुछ प्रतिभागियों के उत्तर सुनें। हो सकता है कि किसी प्रतिभागी के उत्तर में जलवायु परिवर्तन शामिल हो।
4. सहजकर्ता– हां, आपने सही अंदाजा लगाया। हम सभी इस बात से सहमत हैं कि हमने जलवायु, तापमान, बारिश आदि में होने वाले बदलाव देखे और अनुभव किए हैं एवं इनसे हमारा दैनिक जीवन प्रभावित हो रहा है।
5. प्रतिभागियों को 4–6 के समूहों में बांटें। बातों के आधार पर पुरुषों या महिलाओं की पहचान करने के लिए उन्हें आगे दी गई गतिविधि शीट दें:

गतिविधि पत्रक 1

क्र. सं.	कथन	पुरुष/लड़के	महिलाएं/लड़कियां
1.	मौसम में बदलाव के कारण कृषि प्रभावित हो रही है और इसलिए मुझे काम के लिए बाहर जाना पड़ता है।		
2.	गर्म और उमस/नमी वाले मौसम के कारण मुझे अधिक दिन तक माहवारी होती है और मेरा माहवारी चक्र अनियमित हो गया है।		
3.	मुझे घर में छत की मरम्मत जैसे अतिरिक्त काम करने पड़ते हैं।		
4.	पानी और जलावन की लकड़ी की कमी से मेरा काम बढ़ गया है क्योंकि मुझे दिन में उन्हें इकट्ठा करने में अधिक समय लगता है।		
5.	गर्भावस्था के दौरान, मैं गर्मी से एलर्जी/संक्रमण से प्रभावित होती हूँ और मुझे थकान का अनुभव भी होता है।		
6.	सूखे के कारण मुझे भोजन की कमी हो रही है, जिस कारण मुझे कुपोषण और खून की कमी हो सकती है।		
7.	मैं अपने पशु को चराने के लिए दूर ले जाता/जाती हूं, क्योंकि यहां घास आसानी से उपलब्ध नहीं होती है।		
8.	घर पर काम का बोझ बढ़ने और अत्यधिक गर्मी के कारण मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा।		
9.	पानी की कमी के कारण अधिक काम का बोझ हो रहा है और मुझे कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं हो रही हैं।		
10.	मुझे जंगल से मिलने वाले फल, फूल, जलावन को इकट्ठा करने के लिए काफी दूर जाना पड़ता है, जो पहले आसानी से उपलब्ध हो जाता था।		
11.	मैं आमतौर पर सरकार द्वारा सूखा राहत से संबंधित बैठकों में शामिल नहीं हो पाता/पाती हूँ।		
12.	गर्भावस्था/धात्री अवस्था में भी पानी दूर-दूर से लाना पड़ता है, जो पहले आसानी से मिलता था।		

6. प्रतिभागियों को गतिविधि पूरी करने के लिए 15 मिनट का समय दें।
7. प्रतिभागियों से पूछें कि उन्होंने इस गतिविधि से क्या सीखा? प्रतिभागियों के प्रयास की सराहना करें तथा उनके द्वारा साझा की गई मुख्य बिन्दुओं का समावेश करते हुए यह स्पष्ट करें कि सामाजिक संरचनाओं के कारण महिलाएँ जलवायु परिवर्तन से अधिक प्रभावित होती है।

गतिविधि 3

1. सहजकर्ता– अब तक, हमने चर्चा की है कि हमारे आस–पास जलवायु परिवर्तन तेज़ी से हो रहा है और हम सभी ने इसके प्रभावों को भी महसूस किया है।
2. सहजकर्ता– हमने इस बात पर भी चर्चा की कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव महिलाओं को कैसे अधिक प्रभावित करते हैं।

   अपने समुदाय की महिला नेतृत्वकर्ता के रूप में और स्वयं सहायता समूहों का नेतृत्व करते हुए, आप सभी ने जलवायु परिवर्तन की बातों को समझने में अच्छा प्रयास किया है।

   अब, इन 2 दिनों के प्रशिक्षण के दौरान निम्न विषयों पर हम अपनी समझ बनाने का प्रयास करेंगे।

   (एक व्हाइट बोर्ड पर सत्र के विषयों को लिखें)

   - जलवायु विज्ञान
   - झारखंड के लिए जलवायु परिवर्तन, जोखिम, असमानता और कमज़ोरी
   - जेंडर और जलवायु परिवर्तन
   - समाधान और कार्य योजना

सहजकर्ता को संदर्भ और उद्देश्यों को बताने के लिए सभी विषयों पर चर्चा करनी होगी।

3. प्रशिक्षण के आखिरी दिन, हम सभी मिलकर जलवायु परिवर्तन के जेंडर आधारित प्रभावों और आपके समुदायों के लिए, जलवायु परिवर्तन को अनुकूल बनाने में आपके पहल के लिए एक कार्य योजना तैयार करेंगे।
4. सहजकर्ता सेतु दीदियों को प्रशिक्षण में पूर्ण भागीदारी के लिए प्रेरित करें, ताकि वे आगे चलकर सखी मंडलों के पदाधिकारियों को भी प्रशिक्षित करें ताकि स्थानीय स्तर पर इन विषयों पर चर्चा कर उसके निराकरण की योजना तैयार करने की पहल किया जा सके।

सहजकर्त्ता के लिए तथ्यः

इस अभ्यास के माध्यम से हमने देखा कि

- जलवायु परिवर्तन से हम सभी प्रभावित होते हैं।
- आमतौर पर इससे रोजगार के अवसर, दैनिक गतिविधियाँ प्रभावित होती है।
- महिलाओं में इसके विशिष्ट प्रभाव यथा माहवारी में अनियमितता, गर्भावस्था के दौरान परेशानी, पर्याप्त पोषण की अनुपलब्धता प्रजनन तंत्र संक्रमण आदि दिखते हैं।
- हमारी सामाजिक अवधारणा के कारण जलवायु परिवर्तन से महिलाओं पर काम का अतिरिक्त बोझ पड़ता है। जैसेः पानी, जलावन की लकड़ी लाने, सग्रहन, घरेलू कामकाज में अधिक समय लगता है।
- घरेलू कामकाज का अतिरिक्त बोझ होने के कारण कई बार बच्चों विशेषकर किशोरी बालिकाओं की शिक्षा अनियमित हो जाती है अथवा पढ़ाई छूट जाती है।

जलवायु परिवर्तन तथा इसके प्रभाव

सत्र 2

उद्देश्य

1. प्रतिभागियों को जलवायु परिवर्तन के खतरे और कारणों को समझने में मदद करना।
2. प्रतिभागियों में जलवायु परिवर्तन से होने वाले जेंडर असमानताओं की समझ को विकसित करना।
3. जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कैसे कम किया जा सकता है इसपर प्रतिभागियो की समझ विकसित करना।

अवधि

2 घंटे

आवश्यक सामग्री

गतिविधि शीट 3 और 4 की प्रति, व्हाइट बोर्ड और मार्कर, आंकड़े 1,2,3,4 की कॉपियां (इन चित्रों को दिखाने के लिए स्लाइड का उपयोग कर सकते हैं।)

रूपरेखा

अवधि	गतिविधियां
10 मिनट	एनर्जाइज़र
30 मिनट	जलवायु क्या है?
15 मिनट	जल चक्र और जलवायु परिवर्तन
40 मिनट	आपदाएं और असमानताओं का जलवायु परिवर्तन के साथ संबंध
20 मिनट	जलवायु परिवर्तन के समाधान

पिछले सत्र के मुख्य विषयों को दोहराएँ।

गतिविधि 1

सहजकर्ता– सत्र में आगे बढ़ने से पहले, आइए हम सब मिलकर एक गीत गाएं।

साथ चलेंगे साथी, साथ-साथ
चलेंगे साथ चलेंगे साथी,
साथ-साथ चलेंगे चाँद में सूरज में,
पश्चिम में पूरब में साथ चलेंगे
साथी साथ-साथ चलेंगे रोने में
हंसने में खेतों में फसलों में साथ चलेंगे
साथी साथ-साथ चलेंगे

प्रतिभागियों को एक घेरा बनाने के लिए कहें।

1. यदि प्रतिभागी ज्यादा हों, तो उन्हें 7–8 व्यक्तियों के तीन या चार समूहों में बांटें।
2. अब सहजकर्ता अपने कदमों से ताल मिलाते हुए प्रतिभागियों को 1–2–3 की गति से मार्च करते हुए आगे बढ़ायेंगे। अगर सहजकर्ता को लगता है कि यह जरूरी है, तो वे गिनती बढ़ा सकते हैं।
3. समूह के सदस्यों को 1–2–3 की गति से मार्च में शामिल होने के लिए कहें और उन्हें इसे एक साथ करने के लिए प्रोत्साहित करें।
4. अब प्रत्येक समूह को अलग–अलग संख्याएं दें; उदाहरण के लिए, समूह 1 '1–2–3' की गति से मार्च करेगा और 4 पर ताली बजाएगा। समूह 2 '1–2–3–4' की गति से मार्च करेगा और 5 पर हल्का शोर करेगा।
5. प्रत्येक समूह को एक जैसे तालमेल में मार्च करने के लिए कहें। जैसे ही समूह एक साथ मार्च करने के लिए पहुंचें, उन्हें धन्यवाद दें और गतिविधि समाप्त करें।
6. सहजकर्ता– हमारा एक साथ मार्च करना इस बात को दर्शाता है कि जलवायु परिवर्तन को अनुकूल बनाने और राहत के लिए हमारा एकजुट होकर कार्य करना कितना प्रभावशाली हो सकता है। इस सत्र में हम झारखंड राज्य के संदर्भ में जलवायु परिवर्तन से संबंधित वैज्ञानिक पहलू, जोखिम, असमानताओं और कमजोरियों के बारे में समझेंगे एवं जलवायु परिवर्तन के कुछ समाधान भी जानेंगे।

गतिविधि 2

1. दिये गए 3 कहानी को बारी बारी से एक–एक प्रतिभागी को पढ़ने के लिए कहें।
2. अन्य प्रतिभागियों से कहें कि वे ध्यान इस से इन कहानियों को सुनें
3. प्रत्येक कहानी के बाद पूछें कि जलवायु परिवर्तन किस तरह से उस कहानी के पात्र के जीवन को प्रभावित कर रहा है (सरिता, सुनीता, नेहा – कहानी के अलग अलग पात्र हैं)

कहानी 1

सरिता 35 साल की महिला है। वह झारखंड के खूंटी जिले की रहने वाली है। उसके परिवार में पति, 3 बच्चे और सास हैं। उनके पास थोड़ी सी ज़मीन है, जिस पर वे धान और कुछ सब्ज़ियां उगाते हैं। सरिता कहती है कि– 'आजकल बारिश सही समय पर नहीं होती, जिससे खेती प्रभावित हो रही है। इसलिए, मेरे पति काम के लिए शहर चले गए हैं। उनके न होने से मुझे अतिरिक्त काम करना पड़ता हैं। मैं अपने परिवार में सभी का ध्यान रखती हूँ और मेरे पति जो पैसे भेजते हैं, वे पर्याप्त नहीं होते। मैं पास की एक फ़ैक्टरी में भी काम करती हूँ, जहाँ मज़दूरी बहुत कम मिलती है। जब से मैंने वहाँ काम करना शुरू किया है, तब से मुझे त्वचा में जलन की समस्या भी होने लगी है।'

जलवायु परिवर्तन ने सरिता के जीवन को कैसे प्रभावित किया है? इसपर विचार करें।

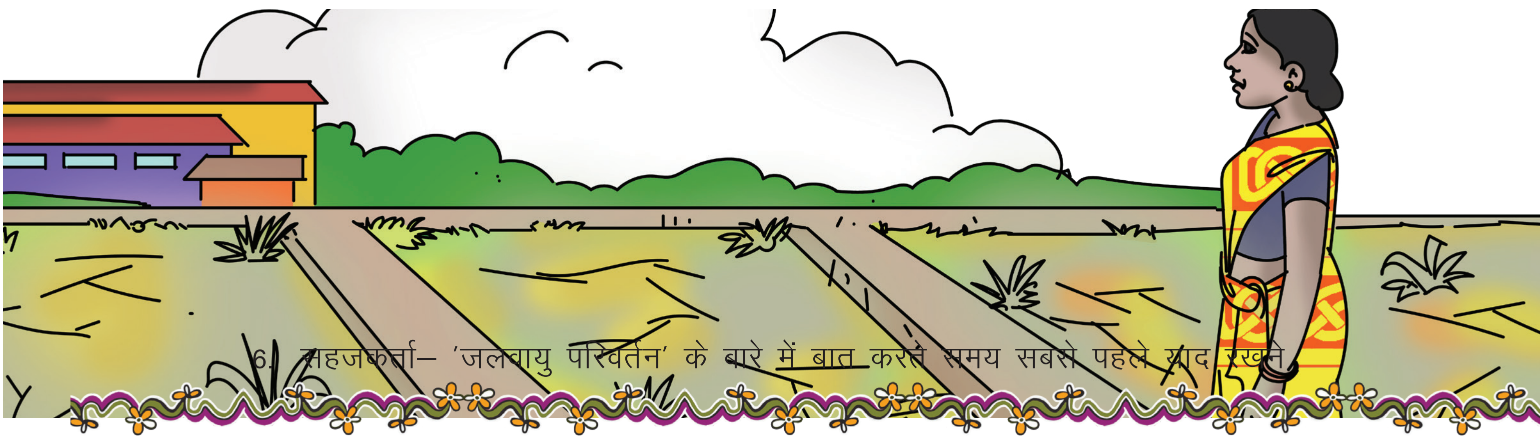

कहानी 2

सुनीता दुमका जिले के एक गांव में अपने 5 लोगों के परिवार में साथ रहती है। उसके परिवार में पति, सास, ससुर और 1 बेटी हैं। अपनी आजीविका चलाने के लिए उनका परिवार जंगल की उपज पर बहुत अधिक निर्भर है। इस साल सरकार ने झारखंड राज्य को सूखाग्रस्त घोषित कर दिया और केंद्र सरकार से राहत की मांग भी की। उनका परिवार लंबे समय से सूखे की मार झेल रहा है। वे खेती में कुछ भी नहीं कर पाए हैं तथा अब जंगल की उपज भी कम हो गई है। सुनीता गर्भवती भी है। एक दिन वह पानी और जलावन की लकड़ी इकट्ठा करने गई थी। अत्यधिक गर्मी और दूर जाने के कारण वह बेहोश हो गई। उसके परिवार वाले उसे अस्पताल ले गए। डॉक्टर ने उसे आराम करने और गर्मी में कहीं आना–जाना नहीं करने की सलाह दी। सुनीता को चिंता होने लगी कि अब पानी और अन्य ज़रूरतें कौन पूरी करेगा!

जलवायु परिवर्तन ने सुनीता के जीवन को कैसे प्रभावित किया है? इसपर विचार करें।

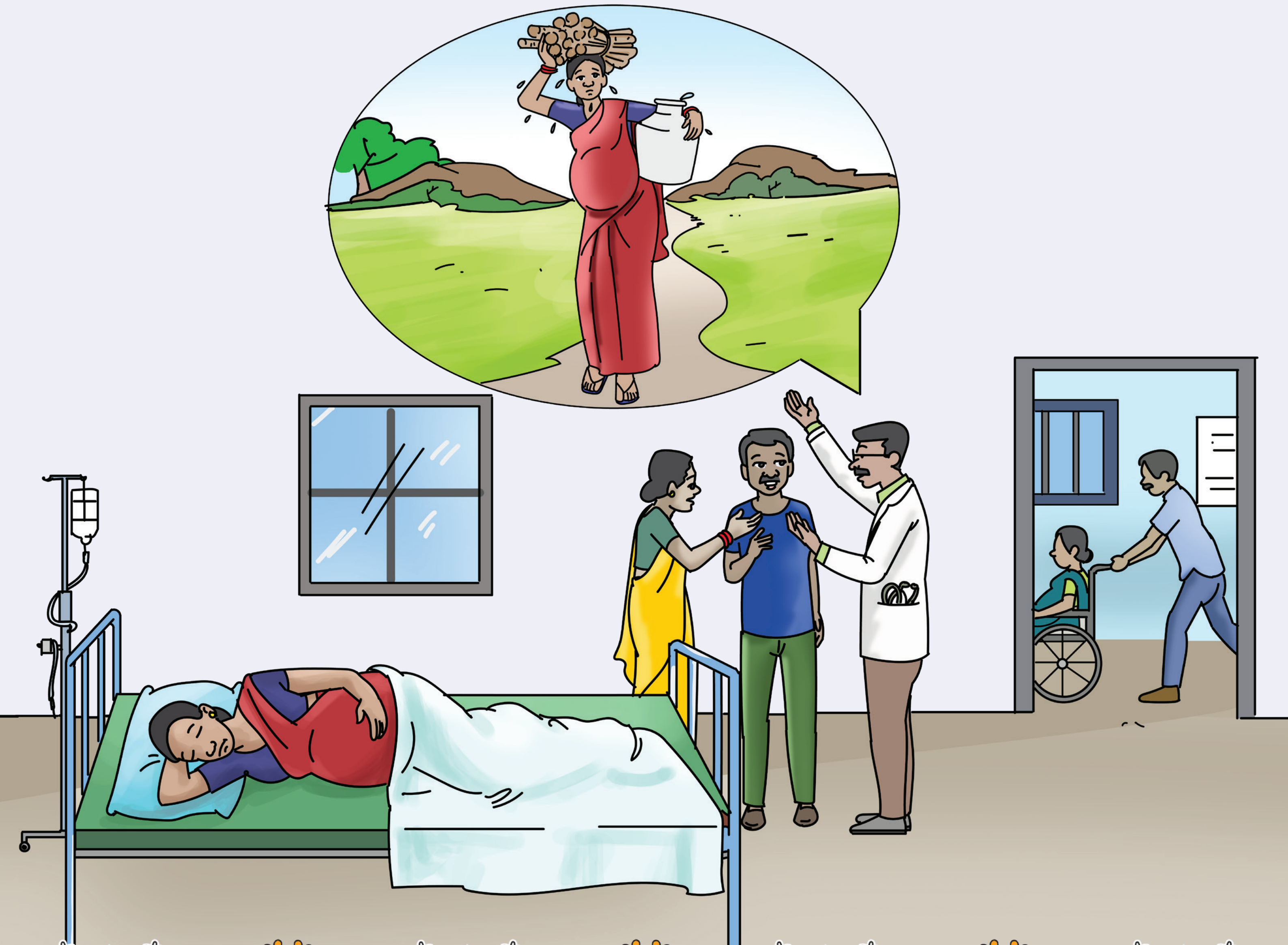

कहानी 3

नेहा 9 साल की लड़की है। वह झारखंड के लातेहार जिले के एक गांव में रहती है। एक दिन उसने अपने अंडरवियर में लाल धब्बे देखे। वह चिंतित हुई और डर गई। इस बात को उसने अपनी मां को बताया। उसकी मां हैरान थी क्योंकि उसे नेहा की माहवारी इतनी जल्दी शुरू होने की उम्मीद नहीं थी। उसने इस बारे में सहिया दीदी से पूछा। सहिया दीदी ने उसे बताया कि बड़े पैमाने पर कीटनाशकों के इस्तेमाल से लड़कियों के यौवनावस्था तक पहुंचने की औसत उम्र में बदलाव आया है, अब माहवारी की शुरुआत लगभग 9 साल में ही हो जाती है। नेहा का परिवार पहले से ही बारिश कम होने और खेती में लाभ कम होने की वजह से परेशान था। आस–पास के तालाब भी सूख गए थे। नेहा को अपनी स्वच्छता रखने में भी बहुत मुश्किल हो रही थी। उसने अपनी मां की मदद करने के लिए स्कूल भी छोड़ दिया और घर पर रहने लगी।

जलवायु परिवर्तन ने नेहा के जीवन को कैसे प्रभावित किया है? इसपर विचार करें।

कुछ समूहों की प्रतिक्रियाएं सुनें और उनके द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना करें।

सहजकर्ता– जलवायु परिवर्तन सतत् विकास के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है, जिसमें गरीबी में कमी, स्वास्थ्य, शिक्षा, जेंडर समानता और आर्थिक विकास शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव हमारे जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में हो रहा है। हमारे दैनिक जीवन, गतिविधियां, स्वास्थ्य, आजीविका और मानसिक स्वास्थ्य सभी जलवायु संकट से बहुत प्रभावित होते हैं। जलवायु परिवर्तन और सतत् विकास के संदर्भ में, पर्यावरण की समस्याएं और समाधान अन्य सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दों से अलग नहीं हैं, बल्कि ये परस्पर जुड़े हुए व एक–दूसरे पर निर्भर हैं।

गतिविधि 3

1. प्रतिभागियों को 4 से 6 के समूहों में बांटें।
2. अभी के मौसम पर चर्चा करें। क्या यह मौसम के अनुरूप है या अलग है? प्रतिभागियों से पूछें कि क्या वे पिछले कुछ समय से इसी तरह के जलवायु परिवर्तन देख रहे हैं?
3. प्रत्येक समूह को निम्नलिखित गतिविधि प्रपत्र बांटें और उन्हें बताएं कि इस प्रपत्र के माध्यम से हम जलवायु परिवर्तन को अधिक व्यवस्थित तरीके से समझने का प्रयास करेंगे।

गतिविधि 4

1. प्रत्येक समूह को सोचने और अपने क्षेत्रों में देखे गए परिवर्तनों के बारे में बताने के लिए मदद करें। उदाहरण के लिए, उनसे पूछें कि पिछले 10–15 वर्षों में उन्होंने तापमान और बारिश में क्या परिवर्तन देखे हैं? प्रतिभागियों को इस गतिविधि को पूरा करने के लिए 15 मिनट का समय दें।
2. सहजकर्ता प्रतिभागियों से प्रत्येक श्रेणी के अंतर्गत उप–शीर्षकों में से सहायता लेने और फिर परिवर्तनों को लिखने के लिए कहें।
3. जब गतिविधि पूरी हो जाए तो, प्रतिभागियों से निम्न प्रश्न पूछें–
   - ये परिवर्तन क्यों हो रहे हैं?
   - ये परिवर्तन उनके जीवन को कैसे प्रभावित कर रहे हैं?
4. कुछ प्रतिभागियों के उत्तर सुनें।

तनाव	10–15 वर्ष पहले	वर्तमान स्थिति
तापमान (विभिन्न मौसमों में तापमान, दिन और रात में, भीषण गर्मी के मौसम की अवधि)		
बारिश (अत्यधिक बारिश के मौसम की अवधि, बारिश की मात्रा)		
जंगल की आग (आग लगने का समय, आग की सीमा)		
वन उपज (उत्पाद की मात्रा और गुणवत्ता, उपज के प्रकार, इसने उनके उपभोग को कैसे प्रभावित किया है)		
जैव–विविधता (वनस्पति और जीव–जंतुओं की किस्में, पारंपरिक खाद्य/बीज की किस्में)		
कृषि (उत्पाद की मात्रा और गुणवत्ता, फसल की किस्में, खेती करने के तरीके)		
पानी की गुणवत्ता और उपलब्धता (पानी के स्रोत, पानी लाने में लगने वाला समय, पानी की गुणवत्ता– पीने और अन्य उद्देश्यों के लिए, इनके स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव)		
भूमि एवं मिट्टी की गुणवत्ता (मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट, जलभराव, भूमि का कटाव)		
पत्थर खदान/खान की गतिविधि (मानव गतिविधियों से जन–जीवन कैसे प्रभावित हुआ है)		

5. सहजकर्ता– आइए, अब समझते हैं कि जलवायु परिवर्तन क्यों हो रहा है। प्रतिभागियों को नीचे दिए गए चित्र दिखाकर उन्हें जलवायु परिवर्तन को समझाने की कोशिश करें।

जलवायु परिवर्तन क्या है?

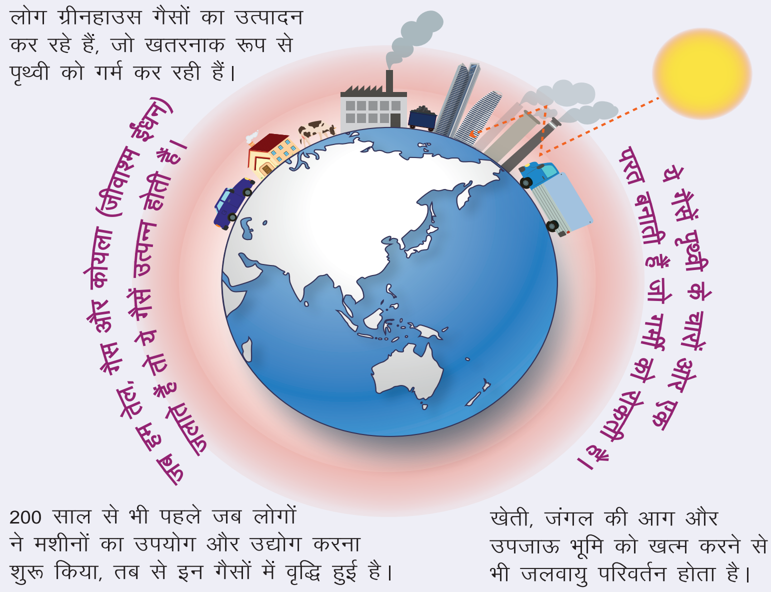

वाली बात यह है कि मौसम और जलवायु एक नहीं हैं। मौसम कम समय रहने वाली स्थिति को कहते हैं जो बहुत परिवर्तनशील हो सकती हैं लेकिन जलवायु लंबे समय की स्थिति को कहते हैं। उदाहरण के लिए, झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग जलवायु है। हजारीबाग, कोडरमा पहाड़ी क्षेत्र हैं इसलिए उनकी जलवायु मध्यम है जबकि लातेहार और पलामू में नमी वाली जलवायु होती है और बारिश कम होती है।

7. हमारी पृथ्वी पर औसत तापमान 15^0 सेल्सियस रहा है, लेकिन पिछले कुछ सालों में इसमें भारी बदलाव देखने को मिले हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि तापमान पहले से काफी तेज़ी से बढ़ रहा है।

   जलवायु परिवर्तन के कई कारण हो सकते हैं, लेकिन इसके मुख्य कारण जीवाश्म ईंधन (घरों और उद्योगों में कोयला, तेल और गैस) का अत्यधिक खपत और जंगलों की कटाई है, परिणामस्वरूप वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसें घुल रही हैं।

8. ग्रीन हाउस गैसें वो गैसें हैं जो हमारे पृथ्वी के वायुमंडल में आने वाली सूरज की किरणों को रोकती हैं और पृथ्वी को गर्मी रखती है। कार्बन डाइआक्साइड, मिथेन, नाइट्रस आक्साइड और फ्रिज में उपयोग होने वाली फ़्लोरिनेटेड गैस आदि मुख्य ग्रीनहाउस गैसें हैं जो मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न होती हैं।

9. ये गैसें वायुमंडल में मिश्रित रहती हैं और उस पर विभिन्न प्रकार के नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। इससे समुद्र के स्तर में वृद्धि, चरम मौसम की घटनाएँ, ग्लेशियरों का पिघलना, सूखा बढ़ना और जंगलों में आग लगने जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

10. यू.एन.डी.आर.आर. के अनुसार, आपदा किसी समुदाय या समाज की गतिविधियों को

गंभीर रूप से प्रभावित करती है। इससे जान–माल की हानि की संभावना होती है, जिससे उनकी क्षमता पर असर पड़ता है।

11. आपदा का प्रभाव तुरंत और स्थानीय हो सकता है, लेकिन यह अक्सर बड़े स्तर पर और लंबे समय तक बना रहता है। इसका असर किसी समुदाय या समाज की अपनी संसाधनों का उपयोग करके निपटने की क्षमता पर निर्भर करता है। कभी–कभी, इसके लिए बाहरी मदद की जरूरत पड़ती है, जिसमें पड़ोसी क्षेत्र, राष्ट्रीय या अंतरर्राष्ट्रीय स्तर के लोग शामिल हो सकते हैं।
12. अगली गतिविधि में हम समझेंगे कि जलवायु परिवर्तन किस प्रकार आपदाओं को जन्म दे रहा है।

गतिविधि 5

1. सहजकर्ता– क्या आप जानते हैं कि बारिश कैसे होती है?
2. कुछ प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएं सुनें और उनक प्रतिक्रियाओं की सराहना करें।
3. आइए बारिश के विज्ञान को समझें। प्रतिभागियों को नीचे दिया गया चित्र दिखाएं–

जल चक्र

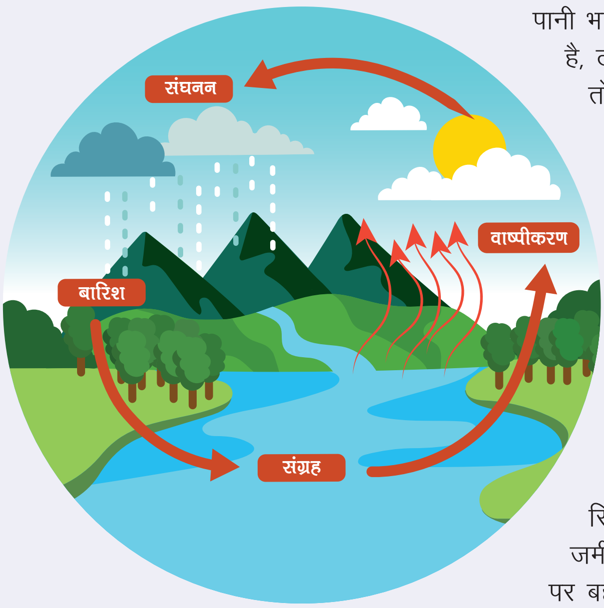

सूरज की गर्मी से नदियों, झीलों और महासागरों का पानी भाप बनकर ऊपर उठकर हवा में मिल जाता है, ठीक वैसे ही जैसे जब आप पानी उबालते हैं तो यह भाप छोड़ता है। जैसे–जैसे पानी भाप में बदलकर वायुमंडल में ऊपर उठता है, यह ठंडा हो जाता है और बादलों के रूप में जम जाता है।

जब बादलों में पानी की बूंदें बहुत भारी हो जाती हैं, तो वे बारिश के रूप में धरती पर वापस गिरती हैं, जो बारिश, बर्फ या ओलों के रूप में हो सकती है। इसके बाद बारिश नदियों, झीलों और महासागरों जैसे जल निकायों में एकत्र होती है। इसका कुछ हिस्सा जमीन में रिसकर भूजल भी बन जाता है। जो पानी जमीन में नहीं घुस पाता, वह जमीन की सतह पर बह जाता है और जल निकायों में वापस लौट जाता है, जिससे चक्र जारी रहता है।

4. इसीलिए इसे जल चक्र कहा जाता है। पृथ्वी की सतह पर, नीचे और ऊपर पानी की यह निरंतर बहाव जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। लेकिन जब जलवायु परिवर्तन होता है, जैसा कि हमने पिछली गतिविधि से समझा है, तो यह जल चक्र को प्रभावित करता है।
5. जलवायु परिवर्तन के कारण जल चक्र पहले से भी तेज हो गया है। पृथ्वी के

तापमान में वृद्धि से वाष्पीकरण की गति बढ़ रही है, जिससे पानी तेजी से भाप बनकर ऊपर उठ रहा है। इसका परिणाम यह है कि कुछ क्षेत्रों में बार–बार सूखा पड़ रहा है, जबकि कुछ क्षेत्रों में भारी बारिश और बाढ़ जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो रही है।

6. विभिन्न प्रक्रियाओं और मानव गतिविधियों के कारण जल चक्र का संतुलन बिगड़ गया है । इसलिए इसपर त्वरित कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

गतिविधि 6

1. आइए, अब अगली गतिविधि करते हैं।
2. सहजकर्ता निम्नलिखित शब्दों को एक–एक करके पढ़ें:
3. प्रत्येक शब्द के बाद एक मिनट रुकें और प्रतिभागियों के मन में, चाहे पुरूष या महिला, जिसका भी ख्याल सबसे पहले आए, उसको अपनी नोटबुक में लिखने दें।

झाड़ू **खाना पकाना** **बाजार** **महुआ**

लाख **पैसा** **बैंक** **बच्चों की देखभाल**

बुजुर्गों की देखभाल **पानी** **बाइक**

4. गतिविधि पूरी होने के बाद प्रतिभागियों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें–
   - उन्होंने कैसे तय किया कि क्या कहाँ जाएगा?
   - कैसे तय करना है, इस बारे में उनके विचार कहाँ से आते हैं?
   - हम कुछ लेखों / गतिविधियों / भूमिकाओं को लड़कियों / महिलाओं से और कुछ को लड़कों / पुरुषों से क्यों जोड़ते हैं?
5. उन सामाजिक भूमिकाओं पर चर्चा करें जिनका पालन पुरुष और महिलाएँ करते हैं। जन्म से ही हमारे समाज ने तय कर दिया है कि पुरुषों और महिलाओं को कौन–सी भूमिकाएँ निभानी चाहिए। यह जेंडर आधारित भेदभाव को दर्शाता है, जिसका प्रभाव सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था के साथ–साथ हमारे जीवन के हर क्षेत्र पर पड़ता है।
6. झारखंड के गांवों में महिलाएँ और लड़कियाँ जलवायु परिवर्तन से असमान रूप से प्रभावित होती हैं। इसके कई कारण हैं, जैसे :– संसाधनों पर सीमित पहुँच, अपनी आजीविका के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर अधिक निर्भरता, सार्वजनिक निर्णय लेने में कम भागीदारी और संपत्ति पर सीमित अधिकार। आइए, अगली गतिविधि के माध्यम से इसे और विस्तार से समझें।

गतिविधि 7

1. प्रतिभागियों से पूछें कि यदि किसी क्षेत्र में सूखा पड़ता है, तो सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला जनसमूह कौन होगा?

   – अमीर या गरीब लोग?

   – शहर में रहने वाले या गांव में रहने वाले लोग?

   अपनी राय दें और कारण बताएं। यदि आपको लगता है कि अमीर लोग अधिक प्रभावित होंगे, तो क्यों ? और यदि गरीब लोग अधिक प्रभावित होंगे, तो उसका कारण क्या हो सकता है?
2. इसे एक उदाहरण से समझते हैं। आप बिहार की बाढ़ के बारे में जानते ही होंगे। यहां बाढ़ हर साल आती है। आंकड़ों के अनुसार, 2020 की बाढ़ की स्थिति सबसे खराब थी, जिससे समाज में व्याप्त 11 जिलों के 15 लाख लोग प्रभावित हुए थे।
3. जब ऐसी आपदा आती है, तो गरीब, अल्पसंख्यक, दलित, जो भारत की जाति व्यवस्था में सबसे निचले तबके से हैं, जैसे कि महिलाएं, बच्चे आदि सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।
4. बाढ़ का असर अधिकतर निचले इलाकों, गांवों और झुग्गी–झोपड़ियों में होता है तथा लोगों के घर डूब जाते हैं। उन्हें मज़बूरी में सड़क किनारे अस्थायी तंबुओं में रहना पड़ता है।
5. एक महिला को बचाव के लिए आई नाव में अपने बच्चे को जन्म देना पड़ा। अस्थायी तंबुओं में शौचालय नहीं था, जिससे महिलाओं को गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा।
6. पुरुष तनाव में थे क्योंकि उनके पास आजीविका का कोई साधन नहीं बचा । सारा फसल नष्ट हो गया और उन्हें अपने परिवार का पालन–पोषण करने के लिए संघर्ष करना पड़ा।
7. चर्चा को वास्तविक उदाहरणों से जोड़ें। जैसे कि हम जानते हैं, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव सभी पर पड़ता है, लेकिन कुछ समुदाय या जनसमूह सामाजिक असमानताओं के कारण इससे अधिक प्रभावित होते हैं।
8. आइए, इसे एक गतिविधि के माध्यम से विस्तार से समझते हैं।

गतिविधि 8

1. प्रतिभागियों को तीन समूहों में बाँटें, प्रत्येक समूह में 7 से 8 सदस्य हों।
2. प्रत्येक समूह को नीचे दिए गए एक कहानी एक पर्ची पर लिखकर दें।
3. उन्हें दी गई स्थिति के अनुसार 5–7 मिनट का एक रोल प्ले तैयार करने के लिए कहें। उन्हें तैयारी के लिए 15 मिनट का समय दें।
4. प्रतिभागियों से रोल प्ले के अनुसार भूमिका निभाने को कहें। इसके बाद उनकी सराहना करें।

कहानी 1

आप गढ़वा जिले के एक छोटे से गांव मिरकी के निवासी हैं। आप में से एक गांव का मुखिया है। आपमें से एक अनुसूचित जाति, एक अनुसूचित जनजाति समुदाय से है, और अन्य महिलाएं, लड़कियां और बच्चे हैं। रोल प्ले के माध्यम से दिखाएं कि पानी की कमी आपके समुदाय के निवासियों के दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करती है।

कहानी 2

आपका गांव अचानक होने वाली बारिश और सूखे से पीड़ित है। सूखे के कारण महुआ उत्पादन कम हो गया है। आप में से एक जंगल में रहने वाले समुदाय से है और प्राकृतिक संसाधनों पर ही अधिक निर्भर है। आप में से एक किसान है जिसके पास बहुत कम ज़मीन है और वह बारिश आधारित खेती पर निर्भर है। आप में से एक किराने और एक राशन की दुकान चलाता है। आप में से एक महिला है जो मुखिया है। इन भूमिकाओं के माध्यम से दिखाएं कि इन लोगों के दैनिक जीवन पर सूखा कैसे प्रभाव डालता है।

कहानी 3

बाढ़ ने आपके समुदाय को बुरी तरह प्रभावित किया है। कई घर पानी में डूब गए हैं। आप सभी को अस्थायी तंबुओं में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा है। बाढ़ में आपका अधिकांश सामान नष्ट हो गया है। आप अपने परिवार के साथ जीने का प्रयास कर रहे हैं। आप में से एक समुदाय का नेता (मुखिया) है, जबकि अन्य छोटे बच्चों वाली महिलाएं हैं, एक गर्भवती है, दो किशोरियां हैं, और अन्य अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति समुदाय से पुरुष हैं। अपने रोल प्ले में, दिखाएं कि आपके गांव में बाढ़ इन लोगों के दैनिक जीवन को कैसे बाधित करती है।

5. प्रतिभागियों से निम्न प्रश्न पूछें–
   - अति कमज़ोर वर्ग, निम्न तबके के लोगों, महिलाओं, लड़कियों और बच्चों की कौन–सी गतिविधियां जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित होती हैं?
   - कुछ समूहों के स्वास्थ्य, आजीविका और दैनिक जीवन जलवायु परिवर्तन के कारण असमान रूप से कैसे प्रभावित होते है?
   - क्या आपको लगता है कि महिलाएँ, लड़कियाँ, अनुसूचित जाति समूह, अनुसूचित जनजाति के लोग और बच्चे जलवायु परिवर्तन से अधिक प्रभावित होते हैं, यदि हाँ, तो कैसे ? प्रतिभागियों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करें।
6. सहजकर्ता यह कहकर गतिविधि का समापन करें –

भारत जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील देशों में से एक है। वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक 2021 के अनुसार, भारत 181 देशों में 7वें स्थान पर है।

7. वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक एक वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट है। रिपोर्ट में भारत में गर्मी की लहरों की संख्या में वृद्धि, चक्रवातों की तीव्रता और संख्या में वृद्धि एवं ग्लेशियरों के पिघलने की दर में वृद्धि को दर्शाया गया है।

8. राष्ट्रीय जलवायु संवेदनशीलता मूल्यांकन रिपोर्ट में झारखंड को 8 अन्य भारतीय राज्यों के साथ जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील माना है। इसके प्रमुख कारण फसल बीमा की कमी, बीपीएल आबादी का उच्च अनुपात, वेक्टर जनित रोग (मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, जापानी इंसेफेलाइटिस और ज़ीका वायरस आदि) की अधिक घटनाएँ, और सूखे पर निर्भर कृषि है ।

9. सहजकर्ता प्रतिभागियों को नीचे दिए गए दो आँकड़े दिखाएँ और झारखंड राज्य के संदर्भ में उनका विश्लेषण करने में मदद करें। जैसा कि हमने पिछली गतिविधियों में समझा है, आँकड़ों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव सभी पर समान नहीं होता। कुछ समुदाय अन्य की तुलना में अधिक प्रभावित होते हैं, और इसके पीछे कई सामाजिक व आर्थिक कारण होते हैं।

10. राज्य में जल संकट और गर्मी की लहर की घटनाओं में वृद्धि हुई है। 2000 से 2014 तक, राज्य ने सबसे अधिक संख्या में गर्म लहरों का अनुभव किया। पलामू और गढ़वा जिले, विशेष रूप से, लंबे समय से सूखे की मार झेल रहे हैं।

11. यह देखते हुए कि जलवायु परिवर्तन एक वास्तविक क्रिया है, अतः यह जरूरी है कि आप सभी, महिला नेतृत्व के रूप में, इसे रोकने के तरीकों पर विचार करें।

झारखंड में संवेदनशील जिलों को दर्शाने वाला मानचित्र

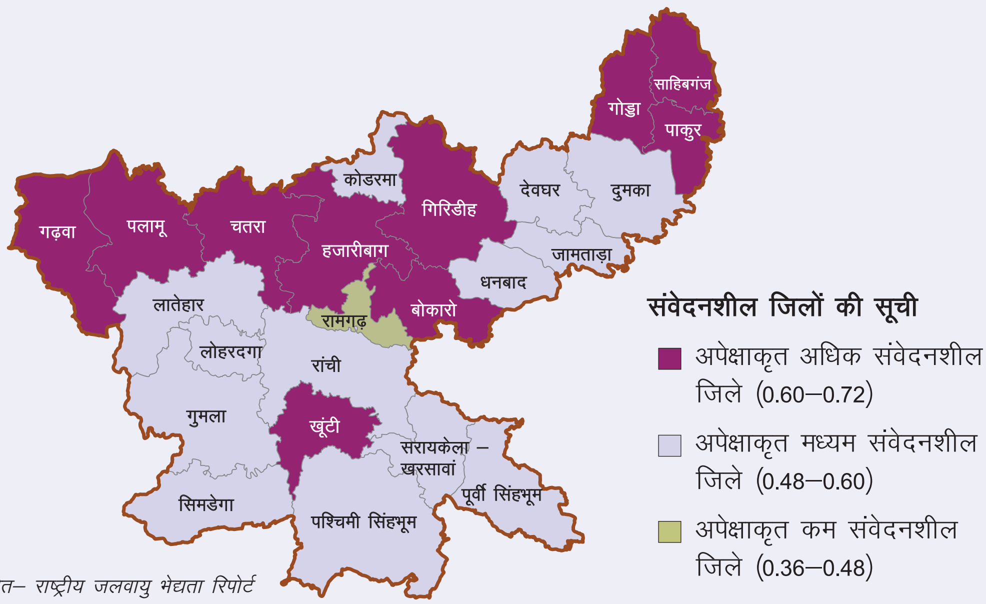

चित्र स्त्रोत– राष्ट्रीय जलवायु भेद्यता रिपोर्ट

झारखण्ड में जल संकट के कारण

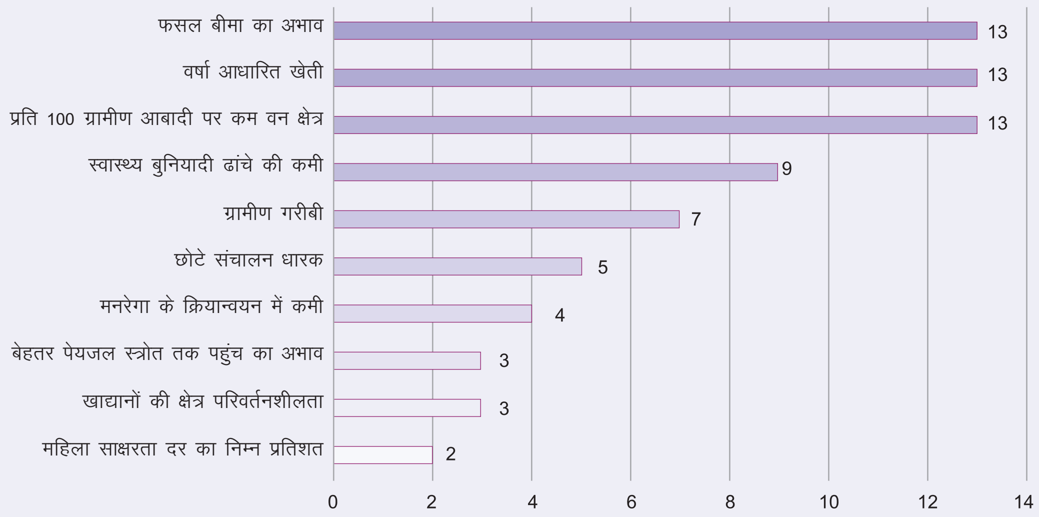

स्त्रोत– राष्ट्रीय जलवायु भेद्यता रिपोर्ट

12. आइए, अब जलवायु परिवर्तन के समाधान के लिए अपनाए गए कुछ तरीकों पर नज़र डालते हैं।

13. समझाएं : जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए सरकारो, उद्योगो और आम लोगों द्वारा प्रयास किए जाते हैं। इनमें ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना या रोकना, जंगलों और सूखी जमीन को बचाना, मिट्टी की गुणवत्ता बनाए रखना और कार्बन सिंक को बढ़ाने के उपाय शामिल हैं ।

14. आपने अपने गांव में सौर ऊर्जा से चलने वाले पानी के पंप या लाइटें देखी होंगी। परंतु कोयला, जिसका उपयोग बिजली पैदा करने के लिए किया जाता है, एक गैर–नवीकरणीय संसाधन है जो ग्रीनहाउस गैसों को छोड़ता है और जलवायु परिवर्तन का एक कारण बनता है। सौर ऊर्जा सीधे सूरज से प्राप्त होती है। आपने शायद अपने पड़ोस में ई–रिक्शा, टुकटुक और छोटा ऑटो देखा होगा। ये कुछ अन्य उदाहरण हैं, जो गैसोलीन और डीजल के विपरीत, बैटरी पर चलते हैं और कम कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं। एक अन्य उदाहरण फसलों में उर्वरकों का उपयोग करने के बजाय जैविक खेती को बढ़ावा देना है।

15. अब हम अनुकूलन को समझते हैं। इसका मतलब ऐसे उपायों से है जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों, जैसेः जल संकट, सूखा, जैव विविधता की कमी और तेज़ मौसम बदलाव से बचाने में मदद करते हैं।

16. स्थानीय स्तर पर कई अनुकूलन उपाय जरूरी हैं, जिनमें ग्रामीण समुदायों की बड़ी भूमिका होगी। इनमें जैविक खेती, जल संरक्षण, जंगलों में आग के खतरे को कम करने के लिए भूमि प्रबंधन और ऐसी फसलें उगाना शामिल है, जो सूखे से कम प्रभावित होती हैं। इससे बाढ़ और अत्यधिक मौसम बदलाव जैसे खतरों से बचाव में मदद मिलेगी।

17. सिर्फ राहत और अनुकूलन ही नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन (resilience) अपनाना भी जरूरी है। लचीलापन (resilience) का मतलब है किसी समुदाय या पर्यावरण पर जलवायु प्रभावों का अनुमान लगाना, उनसे निपटना, उससे होने वाले नुकसान कम करना और शुरुआती झटकों के बाद जरूरत के अनुसार सुधार और

बदलाव करने की क्षमता बढ़ाना। उदाहरण के लिए, ओडिशा एक चक्रवात प्रभावित राज्य है, लेकिन हाल ही में आए 'फानी' चक्रवात के दौरान बेहतर आपदा तैयारी के कारण जानमाल का कम नुकसान हुआ।

18. गाँव के लोगों को नए काम सिखाकर, उनकी आमदनी के अलग–अलग साधन देकर और उन्हें मजबूत बनाकर, उन्हें आपदाओं से बचने और फिर से खड़े होने में मदद मिल सकती है। इसके लिए मौसम की सही जानकारी देना, पहले से चेतावनी देना और लंबे समय के लिए सही योजना बनाना जरूरी है।
19. आने वाले सत्रों में हम आपके समुदाय में सहयोग, क्षमता और अनुकूलन बढ़ाने के लिए एक व्यावहारिक कार्य योजना बनाएंगे।
20. प्रतिभागियों से पूछें अगर उनके कोई सवाल हैं? यदि कोई सवाल पूछे, तो उनका उत्तर दें और सत्र का समापन करें।

जलवायु परिवर्तन के खतरे एवं जेंडर असामानता

सत्र 3

उद्देश्य

1. जेंडर और जलवायु परिवर्तन के बारे में प्रतिभागियों की समझ बढ़ाना।
2. प्रतिभागी समझे पाएंगे कि महिलाओं पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव अधिक क्यों पड़ता है?
3. केस अध्ययन से प्रतिभागियों को जलवायु परिवर्तन से निपटने में महिला नेतृत्व के महत्व को समझने में मदद मिलेगी।
4. वायुमंडल में बढती कार्बन की स्थिति तथा इसके प्रभाव को समझाना।

अवधि

2.5 घंटे

आवश्यक सामग्री

सामग्री– तालिका 1 और 2 की प्रतियां या स्लाइड का उपयोग करें, चार्ट 1 की प्रतियां या स्लाइड का उपयोग करें, चार्ट पेपर और रंग, चित्र 1 की प्रतियां या स्लाइड का उपयोग करें, व्हाइट बोर्ड और मार्कर, गोंद/टेप

रूपरेखा

अवधि	गतिविधियां
10 मिनट	एनर्जाइज़र
25 मिनट	जेंडर क्यों
25 मिनट	जेंडर और जलवायु के प्रभाव
40 मिनट	नेतृत्व की कहानियां
40 मिनट	कार्बन (न्यूट्रैलिटी), पृथक्करण प्रयास और जेंडर–न्यायोचित परिवर्तन

गतिविधि 1

1. प्रतिभागियों को एक गोल घेरे में खड़े होने के लिए कहें।
2. चलिए, एक साथ मिलकर एक खेल खेलते हैं।
3. सहजकर्ता–समूह साथ मिलकर दस तक गिनेगा। कोई भी प्रतिभागी एक संख्या बोल सकता है, प्रत्येक प्रतिभागी अलग संख्या बोलेगा। याद रखें सभी संख्याओं को एक क्रम में ही बोलें।

4. इस खेल को करते समय कोई अन्य शब्द नहीं बोला जा सकता। कोई भी इशारा नहीं किया जा सकता। यदि दो लोग एक ही समय में एक संख्या बोलते हैं, या यदि क्रम अलग हुआ है, तो शुरुआत में वापस जाएं और फिर से प्रयास करें। देखें कि समूह कितनी दूर तक गिन सकता है!
5. इस खेल को कम से कम 5 मिनट तक खेलें। यदि समूह 10 तक गिनती पूरी कर लेता है, तो उनकी सराहना करें। यदि वे पूरी नहीं कर पाते हैं, तो उन्हें दिन के अंत में फिर से प्रयास करने के लिए कहें।
6. हमारे पास विभिन्न प्रकार के सामाजिक पृष्ठभूमि, समुदाय और आयु वर्ग हैं। इस खेल के माध्यम से, हम एक साथ आए और एक–दूसरे का साथ दिया। यह सामूहिकता और नेतृत्व की ताकत है जिसे आपने अपने समुदायों और स्वयं सहायता समूहों में प्रदर्शित किया है।

   हम केस स्टडी के माध्यम से जेंडर और जलवायु के बीच के संबंधों के बारे में और अधिक जानेंगे।

गतिविधि 2

1. महिलाएं, विशेष रूप से पिछड़े समुदायों की महिलाएं जलवायु संकट का ज्यादा बोझ उठाती हैं। महिलाएं जलवायु परिवर्तन से सबसे ज़्यादा प्रभावित होती हैं और उनके पास जलवायु प्रभावों को अनुकूलित करने या कम करने के लिए कम संसाधन होते हैं जो उनके विकास के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हैं।
2. अब, आइए इसे पूरे तरीके से समझते हैं।
3. सहजकर्ता प्रतिभागियों से अपने पूरे दिन के कार्यक्रम को संक्षेप में बताने के लिए कहेंगे।
4. प्रतिभागियों से पूछें कि परिवार में सबसे ज्यादा काम कौन करता है? किसका काम महत्वपूर्ण और मूल्यवान है? उनके उत्तर को सुनें।
5. प्रतिभागियों को 5 से 6 समूहों में बांटें।
6. प्रत्येक समूह को एक परिवार का सदस्य दें– जैसे कि पति, बेटा, बेटी, भाभी, देवर, बहू, सास और ससुर।
7. उन्हें अपने गांवों में इन पात्रों के सामान्य दैनिक कार्यों पर ध्यान देने के लिए कहें, न कि अपने परिवार के किसी विशेष व्यक्ति पर ध्यान देने के लिए।
8. समूह से कहें कि जिस सदस्य को यह समय–सारणी दी गई है, वे एक समय/दैनिक कार्यक्रम की सूची बनाएं। इस कार्य के लिए 15 मिनट का समय दें। उन्हें नीचे दी गई तालिका दें–

समय	गतिविधि

9. उदाहरण के लिए नीचे कुछ प्रश्न दिए गए हैं:
   - वे सुबह उठते ही क्या करते हैं?
   - दिन भर में कौन–कौन से काम किए जाते हैं? अगर वे दिन में आराम करते हैं तो उस हिस्से को लाल रंग से दिखाएं।
   - उन्हें आराम करने का समय कब मिलता है?
   - उन्हें दोस्तों से मिलना, बाहर जाना, टीवी देखना, मोबाईल देखना जैसे मनोरंजन के लिए कितना समय मिलता है?
10. प्रत्येक समूह से कहें कि वे प्रत्येक व्यक्ति द्वारा गतिविधियों पर किए गए कुल समय की गणना करें और अपने किए गए काम को दूसरों के सामने प्रस्तुत करें।
11. सहजकर्ता निम्नलिखित प्रश्नों के साथ चर्चा को आगे बढ़ाएंगे– आप इस गतिविधि से क्या समझ पाए? क्या पुरुषों और महिलाओं द्वारा किए जाने वाले समय और काम में कोई अंतर है? क्या पुरुषों और महिलाओं द्वारा किए जाने वाले आराम के समय में कोई अंतर है? यदि हां, तो क्यों?

प्रतिभागियों को नीचे दिया गया चार्ट दिखाएं:

भुगतान, अवैतनिक और कुल कार्य में प्रतिदिन बिताया गया औसत समय (मिनट)

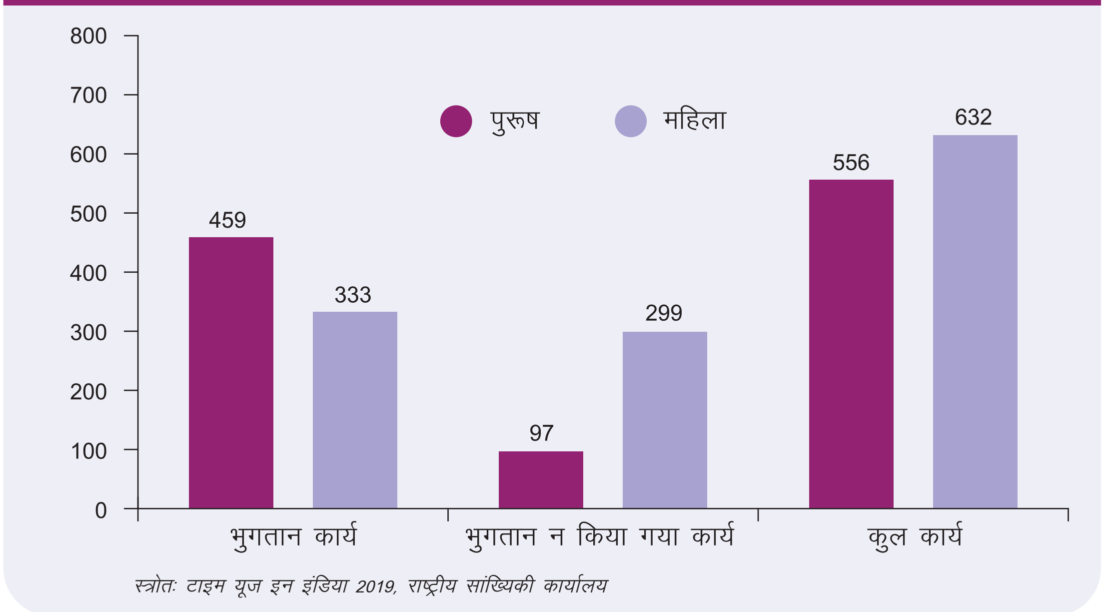

चार्ट को समझाने के लिए सहजकर्ता, पहले मिनटों को घंटों में बदलें।

महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों को बड़े स्तर पर मान्यता नहीं दी जाती और उन्हें भुगतान नहीं किया जाता। कुल मिलाकर, महिलाएं बहुत अधिक काम करती हैं और उनके पास आराम के लिए बहुत कम समय होता है।

महिलाएं सामुदायिक प्रबंधन कार्यों में बहुत कम या कोई भूमिका नहीं निभाती हैं, और यही वह क्षेत्र है जहां निर्णय लिए जाते हैं और ये उनके जीवन को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, आरक्षण के कारण महिलाएं मुखिया बन गई हैं, लेकिन अभी भी नेतृत्व, निर्णय लेना और नियंत्रण उनके पतियों के हाथों में है, जिन्हें मुखिया पति कहा जाता है।

गतिविधि 3

1. अब प्रतिभागियों से उसी तालिका में गतिविधि जारी रखने और अपने क्षेत्रों के जलवायु परिवर्तन के खतरे को लिखने के लिए कहें (जिन्हें हमने पिछले सत्र में समझा था) जो महिलाओं के विभिन्न कार्यों और भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं। वे एक ही काम के लिए कई जलवायु के जोखिमों की पहचान भी कर सकते हैं। इस कार्य को करने के लिए प्रतिभागियों को 15 मिनट का समय दें। उदाहरण के लिए नीचे दी गई तालिका वितरित करें:

समय	गतिविधि	जलवायु जोखिम	प्रभाव
सुबह 5 बजे	पानी लाना	गर्मी से होने वाला जल संकट	यात्रा करने के लिए लंबी दूरी तय करना, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ना
सुबह 7 बजे	खाना पकाना	गर्मी, ऊर्जा की कमी	अत्यधिक गर्मी में खाना बनाना मुश्किल होना, जलावन की लकड़ी इकट्ठा करने में मुश्किल होना, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होना
दोपहर 12 बजे	चावल की खेती	गर्मी, सूखा	अत्यधिक गर्मी में काम करने में कठिनाई मुश्किल होना, कम उत्पादन, खाद्य असुरक्षा, अतिरिक्त बोझ

2. गतिविधि समाप्त करने के बाद, प्रतिभागियों की सराहना करें।
3. सहजकर्ता निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करेंगे–
   - आप इन 2 कॉलम को जोड़कर क्या समझ सकते हैं?
   - क्या आपको लगता है कि जलवायु परिवर्तन से महिलाओं का स्वास्थ्य, पोषण प्रभावित होता है तथा उनपर कार्यो का अतिरिक्त बोझ पड़ता है।
4. गतिविधि का समापन यह कहकर करें कि–

   जलवायु परिवर्तन अधिकांशतः गरीब और पिछड़ी समुदायों की महिलाओं को ज्यादा प्रभावित करता है। जलवायु परिवर्तन को अनुकूल करने और क्षमतावर्धन की प्रक्रियाओं में गरीब एवं पिछड़ा महिलाओं को शामिल करने की आवश्यकता है।

   आइए, अगली गतिविधियों में इस बारे में और अधिक समझें कि 'महिला नेतृत्व' जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और क्षमता निर्माण में कैसे सकारात्मक भूमिका निभा सकता है।

गतिविधि 4

1. प्रतिभागियों को समूहों में बांटें।
2. समूहों को पहली 2 कहानियां पढ़ने को दें। (ये कहानियां सत्र के अंत में जोड़ा गया है) प्रतिभागियों को पढ़ने और चर्चा करने के लिए 20 मिनट का समय दें।
3. यदि समूह बड़ा हो, तो सहजकर्ता दूसरे समूह के लिए कहानी को दोहरा सकते हैं।
4. प्रतिभागियों को चर्चा करने के लिए निम्न प्रश्न दें–
   - वे इन परियोजनाओं में महिलाओं की भूमिका को कैसे देखते हैं?
   - ये मौजूदा जेंडर भूमिकाओं से कैसे भिन्न हैं?
   - ये परियोजनाएं जेंडर कमज़ोरियों को कैसे दिखाती हैं?
   - आपको ऐसा क्यों लगता है कि बदलते जलवायु के साथ रहने और अपने आपको अनुकूल बनाने के लिए महिलाओं का नेतृत्व महत्वपूर्ण है?
5. प्रतिभागियों को अपनी चर्चा के मुख्य बिंदुओं को निम्नलिखित तरीके से चार्ट पेपर पर लिखने के लिए कहें। नीचे दिए गए चित्र को मार्कर से बोर्ड पर बनाएं।
6. उन्हें इस कार्य को पूरा करने के लिए 15 मिनट का और समय दें।
7. प्रत्येक समूह को अपनी प्रस्तुतिकरण तैयार करने के लिए 5 मिनट का समय दें। प्रस्तुती देने से पहले सभी समूहों को कहानी पढ़कर सुनाने के लिए कहें।

8. प्रतिभागियों से सत्र के बाद इन चार्टों को दीवार पर चिपकाने के लिए कहें।
9. इन सभी कहानियों के माध्यम से हमें यह समझ में आता है कि जलवायु परिवर्तन समाज में व्याप्त जेंडर असमानताओं को और बढ़ाएगा, जिससे महिलाएं और अधिक असुरक्षित हो जाएंगी।
10. प्रतिभागियों को बोर्ड पर संबंधित आंकड़े बिंदुओं में लिखकर दिखाएं:
    - पूरे विश्व में गरीबी में रहने वाले 130 करोड़ लोगों में से 70 प्रतिशत महिलाएँ हैं।
    - आपदाओं के समय महिलाओं और बच्चों की मृत्यु की संभावना 14 गुना बढ़ जाती है।
    - यू.एन. वूमन (2023) ने यह भी बताया कि भारत में, महिलाएं और लड़कियां प्रतिदिन 50 मिनट से अधिक समय पानी इकट्ठा करने में बिताती हैं, जबकि लड़के और पुरुष मात्र 3 मिनट ही पानी इकट्ठा करते हैं। यह स्थिति जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते सूखे और पानी की कमी के साथ और भी बढ़ती जाएगी।

- हाल ही में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (2022) के अनुसार, केवल 42.3 प्रतिशत महिलाओं (15–49 वर्ष की आयु वर्ग में) के पास अपना घर है और केवल 31.7 प्रतिशत महिलाओं के पास व्यक्तिगत या संयुक्त रूप से ज़मीन है, जबकि केवल महिलाओं के अधिकार वाले घर या ज़मीन का डेटा उपलब्ध ही नहीं है।

11. मौजूदा जेंडर प्रथाएं और समाज में सशक्तता को चुनौती देते उनके संबंध, पुरुषों और महिलाओं की जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के साथ अनुकूलन और सामना करने की क्षमताओं के साथ–साथ जलवायु संकट के प्रभावों के प्रति उनकी असुरक्षा को निर्धारित करते हैं।
12. कुछ परिस्थितियों में पुरुषों की पहुँच महिलाओं की तुलना में बेहतर है जैसे– ऋण, भूमि, उत्पादक संपत्ति और संसाधन, क्योंकि उनके पास कुछ स्थितियों में शक्ति या अधिकार है जो महिलाओं के पास नहीं है।
13. चार कारक हैं– 1) निर्णय लेने और राजनीतिक प्रतिनिधित्व में भागीदारी, 2) घर और बाहर के कामों का बंटवारा, खाद्य, स्वास्थ्य पोषण आदि तक की पर्याप्त उपलब्धता 3) संसाधनों पर पहुंच और नियंत्रण तथा 4) ज्ञान और कौशल, ये जलवायु परिवर्तन का सामना करने में पुरुषों और महिलाओं से संबंधित जोखिम और क्षमताओं को निर्धारित करते हैं।
14. हमने यह भी समझा कि जलवायु संकट से निपटने में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, चाहे वह जलवायु परिवर्तन के साथ ढल जाना हो, जलवायु परिवर्तन के साथ रहने की आदत डालना हो या क्षमता बढ़ानी हो। महिलाएं अपने अलग–अलग अनुभवों और प्राथमिकताओं के आधार पर अलग दृष्टिकोण रखतीं हैं, जिन्हें निर्णय लेते समय ध्यान में रखना आवश्यक होता है। सारंडा वन समुदाय की कहानी 2 में एस.एच.जी. (स्वयं सहायता समूह) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
15. प्रतिभागियों से पूछें कि क्या उनके गांवों या स्वयं सहायता समूहों से ऐसे ही कोई उदाहरण हैं?
16. कुछ प्रतिभागियों के उत्तरों को सुनें। उनकी बताई गई कहानियों/समाधानों की सराहना करें।
17. स्वयं सहायता समूहों के साथ आपके संपर्क से आपको संबंधित सरकारी योजनाओं पर जानकारी मिलेगी। पैसे जुटाने के लिए सरकारी अधिकारियों और स्थानीय नेताओं से सहायता कैसे प्राप्त करें, इसकी जानकारी मिलेगी।
18. हम इन महत्वपूर्ण अनुभवों का उपयोग एक कार्य योजना बनाने के लिए करेंगे।

गतिविधि 5

1. प्रतिभागियों को उनके समूहों में पढ़ने के लिए कहानी 1 दें। उन्हें कहानी पढ़ने के लिए 10 मिनट का समय दें।
2. प्रतिभागियों से केस संबंधित उनकी समझ के बारे में पूछें।
3. कुछ प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएं सुनें।
4. सहजकर्त्ता– खेती के पारंपरिक बीजों का संग्रहण कर और पूर्व की कृषि पद्धतियों को फिर से अपनाकर जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां से निपटा जा सकता है। इस कार्य में महिला नेतृत्व की भूमिका अहम है।

गतिविधि 6

1. आइए, समझते हैं कि कार्बन तटस्थता का क्या मतलब होता है?
2. पिछले सत्र में हमने ग्रीनहाउस गैसों (GHG) के बारे में जाना। जब मानवीय गतिविधियां जैसे वनों की कटाई, अपशिष्ट उत्पादन या रासायनिक खेती होती हैं, तो वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड गैस अधिक फैलता है और इसके फलस्वरूप जलवायु परिवर्तन होता है।
3. जब कोई पंचायत कार्बन तटस्थ होने का लक्ष्य रखती है तो वह पंचायत यह सुनिश्चित करती है कि वायुमंडल में कार्बन का रिसाव बिल्कुल न हो अथवा बहुत कम हो। वातावरण में कार्बन छोड़ने की प्रक्रिया को कम करने और कार्बन डाइऑक्साईड जैसे प्रदूषण फैलाने वाली गैसों को वायुमंडल से हटाने के लिए कई प्रयास किए गये हैं।
4. आईए, हमलोग केरल के मीनामगाड़ी की कहानी पढें।
5. किसी एक प्रतिभागी का कहानी–2 पढ़ने के लिए कहें।
6. कहानी सुनने के बाद प्रतिभागियों से पूछें कि कार्बन तटस्थता के लिए पंचायत में क्या–क्या किया या।
7. सहजकर्त्ता पूछें कि ग्राम संगठन या संकुल संगठन कार्बन तटस्थ पंचायत करने के लिए स्वास्थ्य, पोषण स्वच्छता पर क्या कर सकते हैं?
8. कुछ प्रतिक्रियाओं को सुनें।
9. केरल की मीनामगड़ी पंचायत की तरह, देशभर की अन्य पंचायतों ने भी 100 प्रतिशत कार्बन तटस्थता की ओर कदम बढ़ाया है या कार्बन तटस्थता बन गई हैं। उदाहरण के लिए; जम्मू–कश्मीर में पल्ली ग्राम पंचायत, तमिलनाडु में ओदंतुराई ग्राम पंचायत और पुणे में थिकेकरवाड़ी ग्राम पंचायत। ये कार्बन तटस्थता के लिए व्यवहारिक परिवर्तन के अच्छे उदाहरण हैं।
10. प्रतिभागियों से पूछें कि क्या उनके कोई सवाल हैं? यदि हाँ, तो उनके प्रश्नों के उत्तर दें।
11. सत्र के अंत में, संक्षेप में बताएँ कि गतिविधियों और कहानी के माध्यम से हमने जाना कि जलवायु परिवर्तन से महिलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ–ही–साथ इससे उनपर कार्य का अतिरिक्त भार पड़ता है। कार्बन– तटस्थ अर्थव्यवस्था बनाने और उसमें परिवर्तन करने में महिलाओं का सामूहिक नेतृत्व महत्वपूर्ण है।
12. इसे हम अगले सत्र में समझेंगे।

कार्बन तटस्थताः वायुमंडल में कार्बन शून्यता की स्थिति

कहानी 1

पश्चिमी सिंहभूम के पहाड़ी क्षेत्र में लगभग 820 वर्ग किलोमीटर में सारंड़ा जंगल फैला हुआ है। सारंडा शब्द का अर्थ है 'सात सौ पहाड़ियां'। यह दुनिया के सबसे बेहतरीन तथा सबसे बड़े 'साल' के जंगल के रूप में इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह ''हो'', ''मुंडा'' और बिरहोर'' जैसे कई आदिवासी समुदायों का निवास है।

सारंडा घने जंगल के साथ दुनिया के सबसे बड़े लौह अयस्क भंडारों (2,000 मिलियन टन से अधिक) में से एक है। बड़े पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों के उपभोग से होने वाले नुकसान मुख्य रूप से आदिवासी समुदायों द्वारा उठाए जाते हैं, जो पहले से ही अन्य चुनौतियों का सामना कर रहे हैं जैसेः जल स्रोतों का प्रदूषण, वनों की कटाई और मिट्टी का कटाव।

कीस्टोन फाउंडेशन ने मनोहरपुर के 5 गांवों में काम करना शुरू कर दिया है। इस गांव में 'हो' समुदाय के घर हैं। कीस्टोन फांउडेशन के सामुदायिक कार्यों को समुदाय के साथी इंदा जामुदा द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। इंदा ने 200 परिवारों को उनके खेतों और किचन गार्डन में खेती के लिए कई तरह के पारंपरिक बीज वितरित किए हैं। इंदा ने कार्य की शुरूआत में ममार गांव में बैठक रखी। ममार में बैठक के लिए पांच गांवों ममार, चुरगी, कुम्बिया, जामजुंडिया और संकुरा की करीब 45 महिलाएं एक साथ आई थीं। इसके बाद एक सहभागी अभ्यास कराया गया, जिसमें महिलाओं ने

अपने–अपने गांवों की विशेषता और सफलताओं के साथ–साथ उनके सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान की।

उन्होंने बताया कि उनके जल संसाधन कोइना नदी और चेचेगडा झरना हैं। एक बड़ा जंगल उनके गांव को सुरक्षापूर्वक घेरे हुए है और पोषण के लिए वन उपज, जंगली फल–फूल प्रदान करता है। कुछ महिलाओं ने विशेष रूप से बाजरा, दालें और तिलहन के बीजों की कमी की शिकायत की। वर्तमान में, उनके पास कई पारंपरिक फसलों के पर्याप्त बीज नहीं हैं। कोदो, गुंडली, खेरी और मडुआ जैसे मोटे अनाजों के बीज तेजी से गायब हो रहे हैं।

महिलाओं ने सुझाव दिया कि बीजों की कमी से निपटने के लिए बीज बैंक स्थापित किए जाने चाहिए, जिनको स्वयं सहायता समूहों या महिला समूहों द्वारा चलाया जाएगा। पारंपरिक बीजों की खरीद के लिए स्थानीय स्तर और अन्य समुदायों से एक बार सहयोग किया जाना चाहिए, जो अभी भी इन फसलों की खेती करते हैं। संबंधित समूह को बीज बैंकों के प्रबंधन और संचालन के लिए रणनीति तैयार करने, प्रणाली और नियम विकसित करने के लिए सहायता दी जानी चाहिए। बीज बैंक से बीज प्राप्त करने वाले किसान फसल की कटाई के बाद थोड़ी अधिक मात्रा में बीज लौटाएंगे, जिससे बीज बैंक का विस्तार करने और अधिक किसानों को लाभ पहुंचाने में मदद मिलेगी।

बैठक का समापन इस शपथ के साथ हुआ कि पारंपरिक बीजों, कृषि पद्धतियों और खाद्य प्रणालियों की सुरक्षा, संरक्षण और बढ़ावा देने के लिए सभी मिलकर साथ में काम करेंगे।

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों और पारंपरिक फसलों के बीच संबंध के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ, महिलाओं ने संकर फसलों को छोड़ने का फैसला किया। उन्होंने अपने परिवारों को भी मनाया और एस.एच.जी. बैठकों के दौरान बीज बैंक स्थापित करने की योजनाओं पर चर्चा की। इसमें उन्होनें एवं एन.जी.ओ. व गांव के प्रतिनिधियों से सहयोग भी लिया।

पारंपरिक बीज किस्मों के पुनः प्रवर्तन और संरक्षण को बढ़ावा देने तथा उनकी आसानी से उपलब्धता को बढ़ाने के लिए, समुदाय ने स्कूल टोला (गांव) में सामुदायिक बीज बैंक स्थापित करने का निर्णय लिया, जिसमें आवश्यक बुनियादी ढांचे और बीजों की खरीद के लिए आरंभिक सहायता कीस्टोन द्वारा प्रदान की गई। जंगली खांस गांव के ग्राम प्रधान गुरुचरण सरदार ने बीज बैंक के लिए अपना एक कमरा दान कर दिया, जिसमें महिलाओं एवं युवकों ने अपना समय देकर बीज बैंक स्थापित कर दिया।

बीज बैंक खुलते ही ग्रामीण पारंपरिक बीज किस्मों को पुनः उपयोगी बनाया गया और कई किसान संकर किस्मों को छोड़कर पारंपरिक बीज उगाने लगे, जिससे वे सूखे के प्रभावों से कम प्रभावित हुए। महिलाएं बदलाव का नेतृत्व करने और अपने परिवारों के लिए एक स्थायी आय–अर्जन कर पाने से सबसे ज्यादा खुश थीं।

कहानी 2

मीनांगढ़ी पंचायत केरल के वायनाड जिले के सुल्तान बाथरी प्रखंड में स्थित है, जो केरल के हॉटस्पॉट (गर्म स्थलों) में से एक है। इस पंचायत की 76 प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर है। यहां की मुख्य फसलें कॉफ़ी, धान और काली मिर्च हैं। अन्य फसलों में सुपारी और केला शामिल हैं। केरल सरकार ने कार्बन न्यूट्रल वायनाड नामक एक पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया था, जिसका उद्देश्य मीनांगढ़ी पंचायत और बाद में पूरे जिले को कार्बन तटस्थ बनाना था।

'कार्बन न्यूट्रल मीनांगढ़ी' में कृषि, ऊर्जा, कचरा, जल, परिवहन, भूमि उपयोग और पर्यावरण क्षेत्रों की परियोजनाएं शामिल हैं।

शुरूआत में कार्बन–तटस्थता पर लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए पंचायत में अभियान, कक्षाएं और अध्ययन आयोजित किए गए। वर्ष 2017 में मीनांगढ़ी के लिए एक ग्रीन हाउस गैस रिसाव की सूची तैयार की गई। मीनांगढ़ी में इसके रिसाव को कम करने, कार्बन वायुमंडल से अलग कर सुरक्षित करने को बढ़ावा देने, पारिस्थितिकी और जैव विविधता को संरक्षित करने एवं लोगों के क्षमतावर्द्धन के लिए कई योजनाएं तथा हस्तक्षेप लागू किए गए।

'ट्री बैंकिंग' पंचायत में शुरू की गई ऐसी ही एक योजना थी। इस योजना में लोगों को ब्याजमुक्त ऋण देकर पेड़ों की रक्षा करने और उन्हें लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। कुडुम्बश्री और नरेगा की मदद से 2017 से अब तक लगभग 1,58,816 पेड़ लगाए जा चुके हैं। इससे कार्बन अवशोषण, जैव विविधता की सुरक्षा में मदद मिली और यह लोगों की आय का स्रोत भी बन गया।

ऐसी ही एक और पहल मिट्टी व जल संसाधनों की सुरक्षा हेतु नदियों के किनारों पर बांस के पेड़ लगाना था। बांस के पौधों द्वारा अधिक तेजी से कार्बन अवशोषण होता है और मिट्टी को कटाव से बचाते हैं। मिट्टी के कटाव को रोकने और नदी के किनारों की सुरक्षा हेतु जल संसाधनों के किनारों पर जियो–टेक्सटाइल भी बिछाए गए।

पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा जल निकायों को नया जैसा बनाया गया और निजी भूमि पर नए तालाब बनाए गए।

कचरा का ठीक से रख–रखरखाव में सुधार लाने के लिए पंचायत के दो वार्डों के 400 घरों में कचरा और ऊर्जा ऑडिट किए गए। प्राकृतिक तरीके से सड़ने वाले कचरे का ठीक से रख–रखाव के लिए खाद वाला पार्क बनाया गया, जिसमें पांच थंबूरमुझी खाद वाले डिब्बे बनाए गए एवं विकेंद्रीकृत कचरा प्रबंधन के लिए पूरे पंचायत में खाद बनाने के उपकरण बांटे गए। प्लास्टिक के टुकड़े करने वाली एक इकाई की स्थापना भी की गई और हरिता कर्मा सेना द्वारा प्लास्टिक तथा अन्य प्राकृतिक तरीके से सड़ने वाले कचरे को एकत्र किया गया।

वैकल्पिक उत्पादों के लिए एक उत्पादन इकाई भी स्थापित की गई और कुदुम्बश्री सदस्यों को प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें सी.एफ.एल. के साथ फिलामेंट लैंप की जगह एल.ई.डी. बल्ब बनाने का भी प्रशिक्षण दिया गया। पंचायत और नागरिकों की भागीदारी ने इस परियोजना को एक स्थायी पंचायत में बदलने में सफलता पायी है।

कार्बन तटस्थ पंचायत एक प्रकृति आधारित और लोगों पर केंद्रित परियोजना है जो लोगों को अपनी आजीविका में सुधार करने, जलवायु की क्षमता प्राप्त करने एवं पर्यावरण की रक्षा करने का अवसर देता है। पंचायतें अब बदलावों के साथ दूसरे दौर में कदम रख चुकी हैं।

सत्र 4

जलवायु परिवर्तन का महिलाओं के खाद्य, स्वास्थ्य, पोषण पर प्रभाव तथा सामुदायिक संगठनों का प्रयास

उद्देश्य

1. जलवायु परिवर्तन से महिलाओं के खाद्य, स्वास्थ्य, पोषण आदि पर होने वाले प्रभावों तथा इसकें प्रबंधन में महिला सामुदायिक संगठनों के योगदान को समझना।
2. सामुदायिक संगठन के माध्यम से किए जा रहे वैकल्पिक आजीविका के प्रयासों को समझना।
4. जलवायु परिवर्तन के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण पर नकारात्मक प्रभाव को कम करना तथा कार्यभार में हो रही वृद्धि के प्रति समझ बनाना।

अवधि

1.5 घंटे

आवश्यक सामग्री

गतिविधि शीट 1 की प्रतिलिपियाँ, व्हाइट बोर्ड, केस स्टडी

गतिविधि 1

1. प्रतिभागियों को कहानी 1 पढ़ने के लिए दें।
2. उनसे पूछें कि "क्या आपलोग भी इसी तरह की समस्या का सामना करते है?''
3. प्रतिभागियों को इसका जवाब देने के लिए प्रेरित करे, जवाब सुनने के बाद उनके प्रयास की सराहना करें।
4. उनसे पूछे कि "क्या आपलोगों ने भी महिला संगठनों के साथ मिलकर इस तरह की समस्याओं का समाधान किया है?"
5. 2–3 उत्तरों को सुनें
6. उनको समझने में मदद करें।

झारखंड मे करीब 67 प्रतिशत महिलाएं अनेमिया से पीड़ित हैं। प्राकृतिक त्रासदियों जैसे सुखाड़, बाढ़ और तुफान जैसी परिस्थितियों मे महिलाएं पुरुषों के मुकाबले अधिक प्रभावित होती हैं। महिलाएं समान्यतः परिवार में सभी सदस्यों के भोजन के बाद ही भोजन करती हैं। सबकें अंत में खाने के कारण कई बार उन्हें अपने भूख के अनुरूप कम मात्रा में खाना या सभी कुछ नहीं मिलते हैं। साथ–ही–साथ उनपर घरेलू कार्य का भी दबाव होता है।

कहानी 1

सिदाडीह गाँव कई सालों से पीने के पानी की समस्या से जूझ रहा था। लगभग 2– 3 साल से गर्मी के दस्तक देते ही गाँव का कुआँ सूख जा रहा था । महिलाओं को पीने का पानी लाने के लिए काफी दूरी तय करनी पड़ती थी। कुछ टोले में तो कई परिवार गंदे पानी पीने के लिए मजबूर हो जाते थे और ऐसा देखा जाता था कि प्रत्येक साल लोग

दूषित पानी पीने से बीमार हो रहें थे, प्रत्येक साल गाँव में डायरिया तथा पीलिया लोगो को होता था । जिसके इलाज के लिए हजारों रूपया लग जाते थे। विनीता भी इन्हीं में से एक थी। इसी दौरान गाँव मे महिला समूहों का गठन हो रहा था। विनीता ने माँ संतोषी महिला समूह की सदस्यता ली। धीरे–धीरे माँ संतोषी महिला समूह का खाता नजदीक के बैंक मे खुला। जमा पूँजी और लेन–देन को मजबूत करने के लिए चक्रीय निधि की राशि महिला समूह को मिली। विनीता के समूह को मिलाकर कुल बारह समूह सिदाडीह मे बने थे। सिदाडीह मे ग्राम संगठन भी कुछ दिनों मे बन गया। ग्राम संगठन का बैंक खाता खुलने के बाद सामुदायिक निवेश निधि के रूप मे राशि ग्राम संगठन को मिली। समूह और ग्राम संगठन मे बैठक के अक्सर एक दीदी जिसे सेतु दीदी कहा जाता है स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता पर चर्चा करने के लिए आती थी। विनीता भी ग्राम संगठन और समूह बैठक मे उनकी बातों को सुनती थी।

एक समय विनीता भी गर्भवती हुई। घरेलू कामकाज के साथ–साथ काफी दूर से पानी लाने का दायित्व उसे ही निभाना पड़ता था क्योंकि सास बीमार रहती थी और दूसरा कोई नहीं था। विनीता ने सेतु दीदी से सुना था कि गर्भावस्था के दौरान खान पान, स्वच्छता के साथ साथ आराम भी करना है पर पानी लाने के कारण वो आराम नहीं कर पाती थी। मजबूर होकर उसने यह बात ग्राम संगठन मे रखी। ग्राम संगठन के कुछ सदस्यों ने गाँव का पानी गाँव मे रोकने के लिए सोक पीट निर्माण के बारे में सुना था। उन लोगों ने निर्णय लिया कि इस वर्ष बारिश का पानी गाँव से बाहर नहीं जाने देंगे। ग्राम संगठन के सदस्यों ने मुखिया और बीडीओ को गाँव मे चापाकल लगाने और सोक पीट तथा मनरेगा से ट्रेंच का निर्माण करने का प्रस्ताव दिया। प्रस्ताव ग्राम सभा से पारित हो गया। आज सिदाडीह गाँव में चापाकल है और सोकपिट का निर्माण किया गया है। गाँव की महिलाओं को अब गाँव में ही पीने का पानी मिल जाता है।

गतिविधि 2

1. प्रतिभागियों को दूसरी कहानी पढने को कहें।
2. कहानी सुनने के लिए सभी प्रतिभागियों को आँखे बंद करने को कहें।

कहानी 2

रामपुर गाँव मे मौसम के कारण हमेशा सुखाड़ जैसी स्थिति रहती थी। कभी बहुत ज्यादा बारिश से फसल डूब जाती थी तो कभी मॉनसून के समय लंबे समय तक बारिश नहीं होने से फसल सूखने लगते थे और सुखाड़ की स्थिति पैदा हो जाती थी। लगातार बारिश की आँख मिचौली और सूखते फसल से मायूस किसान पलायन करने को मजबूर थे। कई घर से पूरा परिवार मजदूरी के लिए पलायन कर जाते थे। कभी–कभी तो पलायन छः माह से भी अधिक समय तक होता था। सबसे ज्यादा परेशानी गर्भवती महिलाओं, धात्री माताओं और बच्चों को होती थी, जिन्हे पलायन की वजह से आराम नहीं मिल पाता था और आगँनवाड़ी केंद्र की सेवाओं से वो वंचित हो जाती थी। किशोरी और गर्भवती महिलाएँ व्यक्तिगत साफ–सफाई पर भी ध्यान नहीं दे पाती थी। इस दौरान जलछाजन कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु इस गाँव का चयन हुआ। 'गाँव का पानी गाँव मे' और 'खेत का पानी खेत मे' के उद्देश्य के साथ मेंढ बंदी और सोक पीट का निर्माण कार्य शुरू हुआ। निर्माण कार्य मे गाँव की सखी मंडलों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इससे काफी परिवारों के लिए रोजगार के भी रास्ते खुले। अगले बारिश की पानी को खेतों के निचले हिस्से मे बने मेढबंधी से रोकने मे सफलता मिली। निचले क्षेत्रों मे बने सोकपिट के माध्यम से बाहर बहकर

जानेवाले पानी को रोका गया। इससे पानी भूजल तक पहुँच सका और कुओं मे जल स्तर बढ़ा। जो कुएं गर्मी आने के साथ ही सूख जाते थे, उनमें गर्मी में भी पानी रहने लगी। धीरे –धीरे सूखे हुए तालाब फिर पानी से भर उठे। आज पूरा गाँव हरा–भरा दिखता है।

पलायन किए हुए सभी लोग घर वापस आ गए हैं। गर्भवती महिलाओं और बच्चों को आँगनबाड़ी केन्द्रों से नियमित सेवाएं मिलने लगी।

- हम गाँव के लोग किस तरह से इसके प्रभाव को कम कर सकते हैं ?
- कहानी सुनने के बाद प्रतिभागियों से पूछें कि क्या जलवायु परिवर्तन महिला स्वास्थ्य व पोषण को प्रभावित करता है।
- रामपुर के लोगों ने क्या–क्या कार्य किए ?

गतिविधि 3

1. किसी एक प्रतिभागी को तीसरी कहानी को पढने के लिए कहें।
2. कहानी सुनने के लिए सभी प्रतिभागियों को आँख बंद करने के लिए कहें।

कहानी 3

मालती देवी बाडू गाँव की एक किसान है। उसके परिवार मे पति और दो बच्चों के साथ साथ सास–ससुर भी रहते हैं। खेती से सालों भर परिवार का भरण–पोषण मुश्किल था, इसीलिए पति के साथ मजदूरी कर अपने परिवार का भरण–पोषण करती थी। मालती के पूरे परिवार के लोग दिन में केवल एक ही बार खाना खाते थे। जिससे मालती हमेशा बीमार रहती थी तथा वह अनीमिया ग्रसित भी हो गई थी। मालती को दोनों बच्चे काफी कमजोर थे, उसका छोटा बच्चा तो कुपोषित था।

एक दिन उसे शीला से जानकारी मिली कि जैविक खेती तथा कृषि विविधता करके सालों भर अनाज मिल सकता है और मजदूरी के लिए बाहर भी नहीं जाना पड़ेगा। शीला ने उसे बगल गाँव मे कृषि विविधता और जैविक खेती पर चल रहे प्रशिक्षण में शामिल होने को कहा। शीला के कहने पर मालती प्रशिक्षण मे शामिल हुई, जिसमे उसे कम पानी मे लगनेवाले फसल जैसे दलहन और मोटे अनाज की खेती की जानकारी दी गयी। मालती ने अगले तीन माह में ऊपरी और मध्यम जमीन पर दलहन और मडुआ़ की खेती की। खेतों मे गोबर और जैविक खाद का इस्तेमाल किया। टांड़ (ऊपरी) और मध्यम जमीन जो अधिकतर समय पानी के अभाव मे परती ही रहती थी आज दलहन और मडुआ के फसल से लहलहा रहे हैं।

प्रचंड गर्मी और पानी कम रहने पर भी मालती को मोटे अनाज और दलहन की फसल से खाने भर का अनाज मिल जाता है जिससे पोषण की स्थिति में भी सुधार हुआ। इस प्रकार कभी परती रही जमीन पर आज वह कम समय के धान की फसल, दलहन और मडुआ उगा रही है। आज मजदूरी के लिए मालती बाहर नहीं जाती उसके घर मे ही अनाज सालों भर खाने के लिए हो जाता है।

तीनो केस स्टडी के माध्यम में हमने देखा कि महिला तथा समुदायिक संगठन किस तरह से जलवायु परिवर्तन में कमी तथा इसके प्रभाव को कम करते हुए अपनी स्थिति में सुधार ला सकते हैं।

- कहानी सुनने के बाद उनसे पूछें कि किस तरह से मालती के जीवन में बदलाव आया।

इन तीन कहानियों में हमने देखा कि तीनों परिस्थितियों में अपनी वास्तविक स्थिति का आकलन कर समूह तथा ग्राम संगठनों ने निम्नलिखित कार्य किए गएः

- जैविक खेती को अपनाया
- बारिश का पानी जो गाँव से बाहर चला जाता था उसे रोका गया
- घर के आस–पास पोषण वाटिका लगवाया
- सोक पीट बनवाया
- मध्यम तथा टॉड वाले जमीन में मोटे अनाज की खेती की गई, जिससे पोषण की स्थिती में सुधार आया
- पलायन को भी रोका गया
- महिलाओं तथा बच्चे के स्वास्थ्य और पोषण को प्रभावित करने वाले कारकों का समाधान कर उस स्थिति में सुधार लाया गया।

ऐसे कई प्रयास हम अपने गॉव में भी कर सकते है।

जलवायु परिवर्तन एवं पारिवारिक हिंसा एवं सरकारी योजनाएँ

सत्र 5

उद्देश्य

1. जलवायु परिवर्तन पुरुषों और महिलाओं को अलग–अलग तरीके से इसकी समझ बनाना।
2. चर्चा एवं कहानी के माध्यम से प्रतिभागियों का यह समझ विकसित करना कि जलवायु परिवर्तन किस प्रकार जेंडर–आधारित हिंसा को बढ़ावा दे सकता है।
3. सरकारी योजनाओं की जानकारी देकर यह समझने में मदद करना कि कौन–कौन से लाभ लिए जा सकते हैं।

अवधि

2.5 घंटे

आवश्यक सामग्री

सामग्री– व्हाइट बोर्ड, मार्कर, गोंद/टेप, रंग, चार्ट पेपर, केस अध्ययन की प्रतियाँ, तालिका 1,2,3,4,5,6 की प्रतियाँ।

रूपरेखा

अवधि	गतिविधियां
5 मिनट	गतिविधियाँ
20 मिनट	पहले दिन का संक्षिप्त विवरण
40 मिनट	जेंडर एवं जलवायु और इससे जुड़े विभिन्न मुद्दे
40 मिनट	जेंडर आधारित हिंसा और जलवायु परिवर्तन
20 मिनट	सरकारी योजनाएँ

गतिविधि 1

दिन की शुरुआत एक प्रेरक 'चेतना' गीत "तू खुद को बदल" से करें।

तू खुद को बदल, तू खुद को बदल
तब ही तो ज़माना बदलेगा
दरिया की कसम, मौजो की कसम
ये ताना-बाना बदलेगा
तू खुद को बदल, तू खुद को बदल
तब ही तो ज़माना बदलेगा
तू बोलेगी, मुंह खोलेगी
तब ही तो ज़माना बदलेगा

गतिविधि 2

1. कल के सत्र में हमने कई नए विचारों जैसे परिकल्पना, अभ्यास, चिंतन और बातचीत के माध्यम से चीजों को समझने की कोशिश की
2. आगे बढ़ने से पहले कल के सत्रों की सीख को दोहराएं। प्रतिभागियों को मुख्य तथ्यों को दुहराने के लिए प्रोत्साहित करें।
3. प्रतिभागियों को चार से पाँच लोगों के समूहों में बांटें।
4. प्रत्येक समूह को एक–एक विषय दें:
   - जलवायु परिवर्तन क्या है और इसके क्या कारण हैं?
   - जलवायु परिवर्तन ग्रामीण महिलाओं को कैसे प्रभावित कर रहा है?
   - जलवायु परिवर्तन को कम करने, तथा इसके प्रभाव से बाहर निकलने के लिए समूह क्या क्या कर सकते हैं?
   - जलवायु परिवर्तन से निपटने में महिलाओं का नेतृत्व इतना महत्वपूर्ण क्यों है?
5. प्रत्येक समूह से चर्चा करने और उनसे अपनी चर्चा को चार्ट पेपर पर लिखने का अनुरोध करें। इस कार्य को करने के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दें।
6. चर्चा पूरी करने के बाद, प्रत्येक समूह को प्रस्तुतिकरण करने के लिए कहें। प्रत्येक समूह को चर्चा के बिन्दु प्रस्तुत करने के लिए 5 मिनट का समय दें।
7. प्रतिभागियों को दीवारों पर चार्ट पेपर चिपकाने के लिए कहें।
8. अभ्यास को समाप्त करने के लिए सहजकर्ता को सभी के अच्छे कार्य पर टिप्पणी करनी चाहिए। आपने जलवायु परिवर्तन, इसके प्रति संवेदनशीलता, महिला समूह के माध्यम से किए गये पहल, आदि पर चर्चा की।
9. आज के सत्र में हम परिस्थिति अनुकूलन कार्य पर चर्चा करेंगे।

गतिविधि 3

1. प्रतिभागियों को 4 से 6 के समूहों में बांटें।
2. प्रतिभागियों से पानी, आजीविका, स्वास्थ्य और भोजन जैसे कई क्षेत्रों में महिलाओं की जेंडर भूमिकाओं पर चर्चा करने के लिए कहें।
3. प्रतिभागियों को अधिक से अधिक जेंडर भूमिकाओं को याद करने और उन पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
4. जब तक जेंडर भूमिका से संबंधित चर्चा पूरी नहीं हो जातीं, तब तक सहजकर्ता धीरे–धीरे आगे बढ़ेंगे।
5. प्रतिभागियों से प्रत्येक क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को रेखांकित करने के लिए कहें।
6. उन प्रतिभागियों को समझाएं, जिन्हें स्पष्टीकरण की जरूरत हो।
7. सहजकर्ता प्रतिभागियों को: महिलाओं पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर विचार करने के लिए कहें।
8. प्रतिभागियों को जलवायु परिवर्तन से संबंधित आपदाओं के परिणाम पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करें।
9. प्रतिभागियों को तालिका को पूरा करने के लिए कम से कम 20–30 मिनट का समय दें।
10. सहजकर्ता अपने संदर्भ के लिए नीचे दी गई तालिका का उपयोग कर सकते हैं। प्रतिभागियों के लिए केवल शीर्षकों के साथ बोर्ड पर तालिका बनाएं।

क्षेत्र	जेंडर भूमिका (महिलाएं)	जलवायु परिवर्तन के प्रभाव	जलवायु परिवर्तन के प्रति जेंडर संवेदनशीलता
पानी	पीने और घरेलू उपयोग के लिए	सूखे, अनियमित बारिश और घटते भूजल स्तर के कारण जल संकट में वृद्धि	स्वच्छ पानी के लिए आने और जाने में लगने वाले समय तथा दूरी में वृद्धि एकल परिवारों में गर्भावस्था के दौरान पानी लाने की समस्या
	फसलों की सिंचाई	गर्मी, ऊर्जा की कमी	कम होते जल संसाधनों पर बढ़ता संघर्ष
	स्वच्छता	गर्मी, सूखा	पानी की कमी से स्वच्छता सुविधाओं तक पहुंच पर भी असर पड़ता है, खासकर माहवारी स्वच्छता में बाधा आती है जिससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
आजीविका	फसल उत्पादन और भंडारण, कृषि श्रम, छोटे पशुधन, पोल्ट्री फार्मों का प्रबंधन	फसल की औसतन उपज औसतन कम हो जाती है, बढ़ते तापमान के साथ पशुधन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, यथा चारे की गुणवत्ता, पानी और बीमारी फैलने पर निर्भर करेगा	खेती से होने वाली आय में कमी के कारण पलायन होता है और महिलाओं के लिए कम वेतन वाली जोखिम भरी मजदूरी/नौकरी होती हैं। पुरूष सदस्यों के पलायन कर जाने से महिलाओं पर पारिवारिक जिम्मेदारी का बोझ आ जाता है। खाद्य असुरक्षा महिलाओं के पोषण के लिए खतरा बनता है घरेलू और बाहर के काम का अतिरिक्त बोझ

क्षेत्र	जेंडर भूमिका (महिलाएं)	जलवायु परिवर्तन के प्रभाव	जलवायु परिवर्तन के प्रति जेंडर संवेदनशीलता
स्वास्थ्य	बीमारों की देखभाल	वेक्टर और जल जनित रोगों में वृद्धि	बीमारों की देखभाल और खुद के स्वास्थ्य का बढ़ता बोझ स्वच्छ पानी तक पहुँच न होने से जल जनित संक्रमाण
		पानी की कम उपलब्धता	बीमारी के कारण काम पर न जाने के कारण वेतन/मजदूरी का नुकसान व्यक्तिगत स्वच्छता यथा माहवारी प्रबंधन में कठिनाई
भोजन	खाना पकाना खाद्य और पोषण प्रबंधन	कृषि उत्पादन में कमी जलावन की लकड़ी की कम उपलब्धता वन उपज की कम उपलब्धता	भोजन और पोषण प्रबंधन मुश्किल होने से तनाव बढ़ेगा वनों पर निर्भर महिलाओं को अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। भोजन पर खर्च होने वाले पैसों में वृद्धि खाद्य असुरक्षा
वित्तीय सुरक्षा	बचत ज्यादातर घर पर ही होती है बैंक खातों तक सीमित पहुंच कोई बीमा नहीं कोई ज़मीन नहीं	आजीविका और आय का नुकसान	महिलाओं की गरीबी दर पुरुषों की गरीबी दर से अधिक है। महिलाएं आमतौर पर ऋण लेने और उसे चुकाने की जिम्मेदारी उठाती हैं, साथ ही परिवार, पड़ोसियों और दोस्तों से उधार लेती हैं या कभी–कभी अंतिम उपाय के रूप में अपने गहने गिरवी रख देती हैं।
आवास	घर में प्रबंधन अधिकांशतः घर में रहना	गर्मियों में घर घटिया डिज़ाइन और खराब सामग्री के कारण बहुत गर्म और उमस वाले हो जाते हैं आपदाओं में नष्ट हो जाने वाले घर बायोमास (जैव ईंधन) से खाना पकाने से वायु प्रदूषण होता है और घर गर्म हो जाता है	महिलाएँ, विशेषकर निम्न आय वाले परिवारों की महिलाएँ, अधिकांशतः बीमा सेवाओं से वंचित रहती हैं। वायु प्रदूषण होता है और घर गर्म हो जाता है। महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अपने घरों के अंदर अधिक समय बिताती हैं, वे असुविधा, संक्रमणों और बीमारियों के संपर्क में अधिक आती हैं। महिलाओं ने बताया कि घर के अंदर खाना पकाना, व पारंपरिक ईंधन का उपयोग घर को भट्टी जैसा गर्म बना देता है। जैसा गर्म बना देता है। जिन घरों में महिलाएँ मुखिया होती हैं, वहाँ पुनर्निर्माण और मरम्मत एक बड़ी चुनौती बन जाती है, खासकर जब संसाधन सीमित होते हैं।

11. गतिविधि पूरी करने के बाद, प्रतिभागियों से निम्न प्रश्न पूछें:
    - इस गतिविधि से आपने क्या सीखा?
    - क्या जेंडर, जलवायु परिवर्तन और अन्य क्षेत्रों के बीच कोई संबंध है?
12. जलवायु परिवर्तन का स्वास्थ्य, आजीविका, जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य (WASH), आवास और वित्तीय सुरक्षा पर जेंडर आधारित प्रभाव पड़ता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जलवायु परिवर्तन का महिलाओं पर अधिक प्रभाव पड़ता है। आगे की गतिविधियों में हम इसके बारे में और चर्चा करेंगे।

गतिविधि 4

1. सहजकर्ता ब्लैकबोर्ड पर 'हिंसा' शब्द का परिचय देंगे/लिखेंगे और प्रतिभागियों से पूछेंगे कि उनके अनुसार इस शब्द का क्या अर्थ है?
2. कुछ प्रतिभागियों के उत्तर को सुनें।
3. सहजकर्ता प्रतिभागियों को बताएँ कि किसी व्यक्ति या चीज़ को चोट या नुकसान पहुँचाने या मारने के उद्देश्य से किसी भी व्यवहार में बल का प्रयोग करना हिंसा कहलाता है। जब यह हिंसा किसी व्यक्ति के जेंडर के कारण होती है तो इसे जेंडर आधारित हिंसा (GBV) कहा जाता है।
4. प्रतिभागियों से जेंडर आधारित हिंसा के उदाहरण बताने के लिए कहें। उन्हें वे उदाहरण देने के लिए प्रोत्साहित करें, जो उन्होंने स्वयं देखे हों।
5. सहजकर्ता को याद रखना चाहिए कि अक्सर ये एक जैसे होते हैं, लेकिन एक श्रेणी में नहीं आते हैं, जैसे बलात्कार या धमकी, शारीरिक, मानसिक और यौन हिंसा हो सकती है।
6. इस बात के भी सबूत हैं कि आपदा के बाद महिलाओं और लड़कियों के घरेलू एवं यौन हिंसा का शिकार होने की संभावना अधिक होती है, अधिकांशतः जब परिवार विस्थापित हो गए हों और भीड़भाड़ वाले आपातकालीन या संक्रमण वाले आवास में रह रहे हों जहां उनके पास गोपनीयता की कमी हो।
7. जलवायु परिवर्तन जेंडर आधारित हिंसा को बढ़ाता है। आइए, इसे विस्तार से समझते हैं।

गतिविधि 5

1. सहजकर्ता प्रतिभागियों को 4 से 6 के समूहों में बांटें।
2. प्रत्येक समूह को एक–एक कहानी पढ़ने को दें।
3. प्रतिभागियों से चर्चा करने और चर्चा से निकले बिंदुओं को लिखने के लिए कहें।
4. इस कार्य को करने के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दें।

काहानी 1

हुरहु 500 परिवारों का बड़ा गाँव है। इस गाँव मे सुमित्रा देवी अपने परिवार के साथ रहती है। सुमित्रा कोमल महिला समूह से जुड़ी है और सक्रिय रूप से सभी समूह बैठकों मे शामिल होती है। सुमित्रा तथा उसके पति पिछले कई वर्षो से सब्जी की खेती करते है तथा उसे नजदीक के बाजार में बेचते है जिससे उन्हें अच्छी आमदनी हो जाती है और वह अपने परिवार का पालन–पोषण भी अच्छे तरीके से कर लेती है। ताजा साग–सब्जियाँ को वो पूरे साल सेवन करते हैं जिससे उसे और उसके परिवार को सालों भर पौष्टिक भोजन भी मिल जाता है।

आज से तीन–चार साल पहले उसके खाने मे साग सब्जी नहीं होता था तथा परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। पैसे की तंगी के कारण परिवारिक झगड़े शुरू हो गए थे। पति भी शराब पीने लगा था तथा प्रत्येक शाम वह शराब पी कर घर आता तथा सुमित्रा से झगड़ा करता तथा उसे पीटता था। सुमित्रा की स्थिति काफी दयनीय थी। किसी दिन नमक चावल तो किसी दिन आलू की सब्जी और चावल खाकर सुमित्रा एवं परिवार के अन्य सदस्य किसी तरह अपना पेट भरते थे। दो समय यदि भरपेट भात भी ठीक से खाने को मिल जाये तो यह बड़ी बात थी, साग सब्जी तो दूर की बात थी। अनीता देवी इस गाँव मे सेतु दीदी के रूप में का काम करती थी। सखी मण्डल की बैठकों मे वो हमेशा पोषण वाटिका लगाने की बात कहती थी। अनीता कहती थी कि पोषण वाटिका लगाने से ताजे साग सब्जी आसानी से खाने को मिल जाएँगे और बाहर से महंगे साग सब्जी मँगाने की भी जरूरत नहीं है। सुमित्रा भी इन बैठकों मे शामिल होती थी और अनीता की बातों को ध्यान से सुनती थी। समूह बैठक के दौरान उसने गाँव मे पानी की समस्या होने और खेती प्रभावित होने की बात रखी। उसने अनीता से पूछा कि जब पानी का कोई ठिकाना नहीं है तो साग सब्जी की खेती कैसे करें। अनीता ने उसे बताया कि घर में इस्तेमाल के बाद अपशिष्ट पानी और चापकल के पास जमा पानी को पोषण वाटिका मे इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे पानी की समस्या भी हल हो जाएगी। सुमित्रा ने सब्जी धोने, पकाने के बाद बचे गंदा पानी, बाथरूम का पानी और घर के पास के चापकल का गंदा पानी को अस्थायी नाली बनाकर पोषण वाटिका तक पहुंचा दिया । इससे पोषण वाटिका की मिट्टी मे नमी आ गयी। फिर उसने बेड तैयार कर साग सब्जी के बीज उसमे रोप दी। पपीता और सहजन के पौधों से पोषण वाटिका का बाड़ लगा दिया। पोषण वाटिका मे जल्द ही पौष्टिक साग सब्जी उग गए। बाजार में महंगे दर पर मिलने वाले पौष्टिक साग सब्जी आज उसके घर पर ही उगने लगे हैं। सुमित्रा के इस प्रयास से उगे साग–सब्जी को देख उसके पति ने भी हाथ बँटाना शुरू किया। आज सुमित्रा का परिवार खुशहाल है। पूरे परिवार के खान में साग–सब्जी तो है ही सब्जी बेचकर भी अच्छी आमदनी हो जाती है। सुमित्रा के काम से प्रेरित होकर समूह की सभी सदस्यों ने पोषण वाटिका अपने घरों मे लगाया जिससे उपजे ताजे फल–सब्जी का वो सालों भर सेवन कर रही है। इसी तरह, सुमित्रा ने जलवायु परिवर्तन की चुनौती को पोषण वाटिका जैसे अवसर का लाभ लिया और चुनौती को उसने एक बेहतर अवसर में बदलकर दिखलाया।

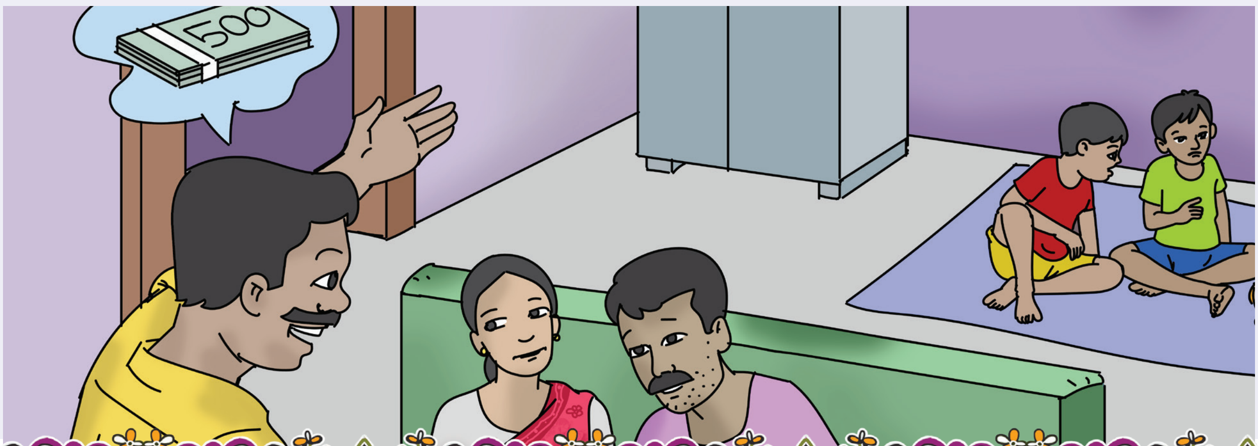

कहानी 2

सीमा लागुरी बागबेड़ा गाँव की एक प्रगतिशील किसान महिला है। पति और दो बच्चों का भरा पूरा परिवार है। सीमा के पास लगभग पाँच एकड़ की जमीन है, जिसपर खेती कर वो अपने पति के साथ अपने परिवार का भरण पोषण करती है। आज से करीब सात साल पहले सीमा को किसी ने हाइब्रिड धान लगाने की सलाह दी। सीमा ने धान लगाया और पैदावार बढ़ाने के लिए रसायनिक खाद का उपयोग किया, इससे पैदावार करीब दो गुणा हुआ। उत्साहित होकर उसने अगले साल भी इसी धान की बीज खरीदकर खेती की । फिर इसका दूष्परिणाम सामने आने लगा। धीरे धीरे हाइब्रिड धान की उत्पादकता कम होने लगी। पानी की खपत भी अधिक होती थी जिससे कुओं का जलस्तर कम होने लगा । अत्यधिक रसायनिक खाद के उपयोग से मिट्टी की उर्वरक क्षमता कम हो गयी । जहरीली कीटनाशक और फफूंदीनाशक के प्रयोग से मिट्टी सहित भूगर्भ जल भी प्रदूषित होने लगा। खेती मे किसानों के लिए लाभकारी छोटे कीड़े , जीव जन्तु गायब हो गए । सीमा को लगा की पहले वाला खेती ही ठीक था , अधिक उत्पादन के लोभ मे अपना खेत, फसल सब गवां बैठी ।

इस प्रकार भूगर्भ जल की कमी होने से पानी 2 किलोमीटर दुर से लाना पड़ता था और फिर घर का सभी कार्य करना पड़ता था। धीरे धीरे सीमा पर अतिरिक्त कार्यभार होता चला गया जिससे उसके स्वास्थ्य पर भी असर दिखने लगा क्योकि वे अनेमिक हो गई थी तथा बार बार बीमार पड़ती थी। घर में भी सास ससुर से हमेशा बाते सुनने को मिलता थी कि वह कुछ काम नही करती है।

तभी उसे अपने गाँव मे जैविक खेती पर प्रशिक्षण होने की सूचना आजीविका कृषक सखी से मिली। प्रशिक्षण में उसे जैविक खाद तैयार करने, जैविक कीटनाशक जैसे नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र तैयार करने का प्रशिक्षण मिला। प्रशिक्षण से वापस आकर उसने जैविक खाद, जैविक कीटनाशक बनाया और सामान्य बीजों का उपचार कर जैविक विधि से धान और सब्जी की खेती की। इस विधि से फसल काफी अच्छे हुए और जैविक खाद से मिट्टी की उर्वरकता धीरे धीरे वापस आ गयी। चूंकि जैविक खेती में पानी का उपयोग हाइब्रिड फसल के मुकाबले कम होता है इसीलिए भू जल का दोहन भी कम हो गया। समय रहते जैविक खेती की तरफ मुड़कर सीमा ने अपने खेत को बंजर होने और हानिकारक रसायनों से भूगर्भ जल को प्रदूषित होने से बचा लिया ।

कहानी 3

संगीता तीन बच्चों की माँ है। उसकी सबसे बड़ी बेटी रानी 16 साल की है। उसका पति विनोद आस–पास के खेतों और कारखानों में मज़दूरी करता है। कम बारिश और सूखे जैसी परिस्थितियों के कारण उनकी पारंपरिक खेती बर्बाद हो गई है। विनोद अक्सर निराश रहता है क्योंकि वह अपने परिवार की सही देखभाल करने में असमर्थ है और उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

वह अक्सर शराब पीता है और खाने एवं पानी की कमी जैसी छोटी–छोटी बातों पर संगीता को पीटता है। उसके दोस्त उसे रानी की शादी किसी से करवाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं ताकि परिवार का बोझ कम हो जाए। विनोद अपने दोस्तों के बहकावे में आकर रानी की शादी करवाने के लिए राजी हो जाता है। रानी एक प्रतिभाशाली छात्रा है जो और पढ़ना चाहती है, लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण उसकी पारिवारिक स्थिति दिन–ब–दिन खराब होती जा रही है। अंततः मजबूरन रानी को पढ़ाई छोड़नी पड़ी और उसकी शादी हो गई।

5. सहजकर्ता को प्रतिभगियों से संक्षेप में निम्न प्रश्न पूछने चाहिए:
   - क्या इन मामलों में पुरुषों और महिलाओं की परिस्थितियों में कोई अंतर होता है?
   - महिलाएँ खास विकल्प क्यों चुनती हैं? इसके पीछे उनकी क्या सोच होती है?
   - इस मामले में किस तरह की हिंसा हो रही है?
   - क्या आप मानते हैं कि जलवायु परिवर्तन का जेंडर आधारित हिंसा से कोई संबंध है?
6. सहजकर्ता– जलवायु परिवर्तन महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ जेंडर आधारित हिंसा की घटनाओं को बढ़ाता है। उष्णकटिबंधीय तूफान, भयंकर बाढ़, भूस्खलन या सूखे जैसी जलवायु आपदाओं के बाद, महिलाओं और लड़कियों के साथ बलात्कार, उत्पीड़न (यौन उत्पीड़न सहित), घरेलू हिंसा, बाल विवाह और तस्करी सहित हिंसा के पूरे चक्र का खतरा बढ़ जाता है।
7. स्थान बदलने (पलायन/अस्थाई शरण स्थलों) से भी हिंसा बढ़ सकती है क्योंकि आश्रय गृहों, शिविरों या अस्थायी बस्तियों में रहने वाली महिलाओं के लिए सुरक्षित और सुलभ बुनियादी ढाँचे एवं सेवाओं की अपेक्षाकृत कमी होती है। फलस्वरूप, महिलाओं के विरूद्ध बलात्कार, यौन उत्पीड़न और अन्य प्रकार की हिंसा होने का खतरा बढ़ जाता है।
8. जेंडर आधारित हिंसा को खत्म करने में मुश्किलें आती हैं, क्योंकि जलवायु संकट से निपटने के लिए राहत, पुनर्वास और त्वरित कार्रवाई के प्रयासों पर अधिक जोर होता है। प्रतिभागियों को बताएँ कि हमने तीन कहानियों के माध्यम से समस्या की पहचान की है। अब, आइए समाधान पर विचार करें। इन परिस्थितियों में महिलाएं और क्या कर सकती हैं?
9. इन मामलों में समस्याओं के समाधान के लिए आपकी क्या राय हैं? प्रतिभागियों को तीन समूहों में बाँट कर इस विषय पर चर्चा कर अपनी चर्चा के मुख्य बिन्दुओं को प्रस्तुत करने को कहें।
10. प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना करें। आइए, देखें कि हम इसमें और क्या–क्या समाधान शामिल कर सकते हैं।

गतिविधि 6

1. आप जे.एस.एल.पी.एस. के सामुदायिक कैडर हैं और कई वर्षों से स्वयं सहायता समूह का हिस्सा रहे हैं। क्या आपने कभी किसी सरकारी योजना का लाभ उठाया है?
2. प्रतिभागियों के उत्तरों को सुनें और समझें कि उन्होंने कैसे और कब किसी सरकारी योजना का लाभ उठाया।
3. सहजकर्ता– बहुत अच्छा! इन जानकारियों को साझा करने के लिए आपका धन्यवाद। अब हम प्रत्येक क्षेत्र के लिए उपलब्ध विभिन्न सरकारी योजनाओं को समझेंगे।
4. प्रतिभागियों को समूहों में बांटें।
5. विभिन्न समूहों को स्वास्थ्य, जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य (WASH), जेंडर आधारित हिंसा, आवास, आजीविका और वित्तीय सुरक्षा के विषय दें।
6. प्रत्येक समूह से एक सदस्य की पहचान करें जो इंटरनेट का उपयोग करना जानता हो।
7. समूह के सदस्यों को इंटरनेट की मदद से अपने क्षेत्र के लिए उपलब्ध विभिन्न सरकारी योजनाओं की पहचान करने के लिए कहें।
8. खोजने के लिए विकीपीडिया और सरकारी योजनाओं जैसी वेबसाइट देखने की सलाह दें।

9. उन्हें चार्ट पेपर पर योजनाओं के नाम और उनसे संबंधित मुख्य बातों को लिखने के लिए कहें।
10. सहजकर्ता प्रत्येक समूह में इस चर्चा को आगे ले जाने में सहयोग करें।
11. इस कार्य को करने के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दें।
12. गतिविधि पूरी होने के बाद, नीचे दी गई तालिका को विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित अलग–अलग योजनाओं के साथ साझा करें–

क्षेत्र	सरकारी योजनाएं
स्वास्थ्य	• राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन • आयुष्मान भारत • मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना • पहाड़िया स्वास्थ्य योजना • मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी सहायता योजना • राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम
आजीविका	• मनरेगा • मुख्यमंत्री श्रमिक योजना • डी.ए.वाई.–एन.आर.एल.एम. • महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना • विस्तार सुधार (ए.टी.एम.ए.) (कृषि) के लिए राज्य विस्तार कार्यक्रमों को समर्थन • अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 • मुख्यमंत्री रोगजार सृजन योजना
जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य	• जल जीवन मिशन (जल) • स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) चरण–II (स्वच्छता)
आवास	• प्रधानमंत्री आवास योजना – ग्रामीण/शहरी (आवास) • अबुआ आवास योजना
जेंडर आधारित हिंसा	• स्वाधार • उज्ज्वला (महिला तस्करी की रोकथाम के लिए) • वन स्टॉप सेंटर • राष्ट्रीय महिला आयोग हेल्पलाइनः 7827170170 • महिला हेल्पलाइन झारखंड–181 • खतरे में पड़ी महिलाओं के लिए 1091 हेल्पलाइन नंबर
वित्तीय सुरक्षा	• राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम – पेंशन योजनाएं • प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना • प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना • आयुष्मान भारत मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना • आदिम जन जाति पेंशन योजना • झारखंड राज्य फसल राहत योजना • झारखंड सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना • मंईया सम्मान योजना • प्रवासी मजदूर बीमा योजना (लाल कार्ड/हरा कार्ड)

13. यह विभिन्न क्षेत्रों के लिए सरकारी योजनाओं का संग्रह है। इन पर ध्यान दें और इन्हें अपने समुदाय में ज़रूरतमंद लोगों, खासतौर पर महिलाओं को बताएँ। आप कार्य योजना बनाते समय भी इनका उपयोग कर सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए स्थानीय कार्य योजना

सत्र 6

उद्देश्य

1. स्थानीय स्तर पर जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चुनौतियों को समझते हुए, समुदाय के पारंपरिक ज्ञान और संसाधनों का उपयोग करके समाधान की रुपरेखा तैयार करने में सहायता करना
2. स्थानीय जलवायु कार्य योजना बनाने में महिलाओं की भूमिका के महत्व पर समझ विकसित करना

अवधि

2.5 घंटे

आवश्यक सामग्री

व्हाइट बोर्ड, मार्कर, गोंद/टेप, रंग, चार्ट पेपर, केस अध्ययन की प्रतियां, तालिका 1,2,3,4,5,6 की प्रतियां।

गतिविधि 1

1. प्रतिभागियों को 4 से 6 के समूहों में बांटें।
2. प्रत्येक समूह को रंग और चार्ट पेपर दें।
3. अब उनसे अपने पंचायत में अनुभव किए गए जलवायु परिवर्तन पर सोचने और चर्चा के लिए कहें। साथ ही अपनी टिप्पणियों को नीचे दी गई तालिका में लिखें–

तालिका 1

क्र. सं.	परिवर्तन के तत्व	पिछले 10–15 वर्षों में परिवर्तन		
		वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं
1.	तापमान			
2.	उमस			
3.	हवा की गति			
4.	बारिश की उपलब्धता			
5.	भूजल की स्थिति			

गतिविधि 2

1. अब प्रतिभागियों से अपनी पंचायतों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव संबंधी तथ्यों पर प्रकाश डालने वाली निम्न तालिका में भरने को कहें।
2. उन्हें गतिविधि पूरी करने के लिए 10 मिनट का समय दें।

तालिका 2

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव	पिछले 10-15 वर्षों में परिवर्तन		
(स्थानीय स्तर पर जलवायु परिवर्तन के महत्वपूर्ण प्रभावों की पहचान)	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं
सूखा			
जंगल की आग			
बाढ़			
भारी बारिश			
तापमान में बदलाव			
भूस्खलन			
गर्मी में वृद्धि			

3. गतिविधि पूरी होने के बाद, सहजकर्ता अगली गतिविधि पर जाएं।
4. उन्हें गतिविधि पूरी करने के लिए 10 मिनट का समय दें।
5. दूसरी पंचायत में शादी करने वालों को अपने अनुभवों को लिखने में मुश्किल हो सकती है। उन्हें बड़ों के विचार सुनने और उनके अनुभव से सीखने के लिए प्रोत्साहित करें।
6. इस कार्य को पूरा करने के बाद, सहजकर्ता अगली गतिविधि पर जाएं।

गतिविधि 3

1. प्रतिभागियों को नीचे दी गई तालिका का उपयोग करके स्थानीय स्तर पर पर्यावरण और जैव विविधता पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का आकलन करने के लिए कहें:

तालिका 3

पर्यावरण और जैव विविधता के तत्व	जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली समस्याएं	समस्याओं में बढ़ोत्तरी
जल निकाय		
तालाब		
नदियाँ		
नाले/धाराएं/सूखी जमीन		
धान के खेत		
पक्षी		
जंगल		
सूक्ष्म वनोपज		
जंगली जानवर		
पवित्र उपवन		
पहाड़/पहाड़ियां		
पेड़		
घास		
झाड़ियां		
कीड़े–मकोड़े		

2. किसी समस्या का प्रभाव कितना बड़ा है इससे समझना जरूरी है, जैसे तालाब सूखने या जंगल में पेड़ कम होने से वहां के जीव–जंतुओं और लोगों पर असर पड़ता है।
3. प्रतिभागियों से उनके पारंपरिक ज्ञान और गांव के संसाधनों पर विचार करने को कहें।
4. उन्हें इस गतिविधि को पूरा करने के लिए 15 मिनट का समय दें।
5. गतिविधि पूरी होने के बाद प्रतिभागियों से अगली गतिविधि पर जाने के लिए कहें।

गतिविधि 4

1. प्रतिभागियों से नीचे दी गई तालिका का उपयोग करके यह आंकलन करने के लिए कहें कि जलवायु परिवर्तन ने उनके समुदायिक जीवन को कैसे प्रभावित किया है:
2. प्रतिभागियों से उनके पारंपरिक ज्ञान और गांव के संसाधनों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करें।

तालिका 4

क्षेत्र	पिछले 10–15 वर्षों में हुए बदलाव	वर्तमान स्थिति	कौन-कौन प्रभावित हैं?	वे कैसे प्रभावित हैं?	किस हद तक प्रभावित अति गंभीर/ कम गंभीर
कृषि					
गैर–लकड़ी वन उत्पाद					
पशुधन					
मछली पालन					
सिंचाई					
पेयजल					
स्वास्थ्य					
आवास					
स्वच्छता					
अन्य, यदि कोई हो					

3. उन्हें गतिविधि को पूरी करने के लिए 15 मिनट का समय दें।
4. इस गतिविधि को पूरा करने के बाद प्रतिभागियों को अगली गतिविधि पर जाने के लिए कहें।

गतिविधि 5

1. बहुत अच्छा ! हमने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से जलवायु परिवर्तन का असर पर्यावरण, जीव–जंतुओं और मानव जीवन पर कैसे पड़ता है, इसे सूचीबद्ध किया है।
2. झारखंड में पलामू जिले के एक गाँव के लोगों ने अनिश्चित वर्षा के कारण होने वाली जल संकट की समस्या से निपटने के लिए एक छोटा चेक डैम बनाने और पारंपरिक जल संरक्षण विधियों को अपनाने की पहल की। स्थानीय लोग बड़े बांधों पर निर्भर रहने के बजाय, जो समुदायों के विस्थापन का कारण बन सकते हैं, छोटे जलाशय बनाकर और स्थानीय जल स्रोतों का उपयोग करके सूखे जैसी समस्याओं से निपटने के रास्ते निकाले। यह जलवायु परिवर्तन के प्रभावों, जैसे अनियमित वर्षा, के प्रति समुदाय द्वारा किए गए अनुकूलन प्रयासों को दर्शाता है।
3. सहजकर्ता– योजनाएँ परिस्थितियों की ज़रूरत को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिए। ये स्थानीय ज्ञान और संसाधनों का उपयोग करके, समुदाय के लोगों की सक्रिय भागीदारी से बनाई जाए।
4. जब आप कोई योजना बनाएँ, तो इन 2 दिनों में प्राप्त हुए सभी सीखों को याद रखें।
   - जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को पुरुषों और महिलाओं, दोनों के नजरिए से समझें।
   - जेंडर समानता और भागीदारी को बढ़ावा दें और इसे लागू करें।
   - महिलाओं और पुरुषों के योगदान और भागीदारी के लाभ को पहचानें।
   - महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिए लक्ष्य तय करें। इस प्रक्रिया को समावेशी बनाने के लिए युवाओं और किशोर–किशोरियों की भागीदारी भी सुनिश्चित करें।
   - योजना बनाने एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करें और उनकी जानकारी, आर्थिक संसाधनों व शिक्षा तक पहुँच को प्राथमिकता दें।
   - योजनाओं को बनाते और लागू करते समय जेंडर पहलुओं का ध्यान रखें।
5. इन सब बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, पहले किए गए विश्लेषणों पर सोचें और अपने समुदाय के लिए निकाले गए निष्कर्षों को याद करें। समाधान ऐसे हों जो पूरे समुदाय को शामिल करें और जिनका नेतृत्व महिलाएं करें।

6 प्रतिभागियों को किसी भी सरकारी योजना के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करें जिसका वे लाभ उठाना चाहते हैं और यदि संभव हो तो एक काल्पनिक बजट भी बनाने का प्रयास करें

7. प्रतिभागियों से अपने समूह में दी गई तालिका को पूरा करने के लिए कहें। इस कार्य के लिए उन्हें 20 मिनट का समय दें :इस कार्य को करने के लिए उन्हें 20 मिनट का समय दें:

तालिका 5

समाधान जो किए जा सकते हैं	सरकारी योजनाएं जिनका लाभ उठाया जाना चाहिए	बजट

गतिविधि 6

1. सहजकर्ता – आप सभी ने बहुत बढ़िया काम किया। आईए अब पंचायत स्तर पर दो–तीन जलवायु परिवर्तन से संबंधित समस्या चिन्हित करें और उसके समाधान के लिए स्वयं सहायता समूह होकर आप क्या कर सकते हैं, इस पर चर्चा करें।
2. प्रतिभागियों को उनके पंचायतों में जलवायु परिवर्तन के समस्या लिखकर कार्ययोजना तैयार करने के लिए कहें।
3. इस गतिविधि को पूरा करने के लिए 40 मिनट का समय दें।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव	क्या समस्या का सामना कर रहे हैं	कैसे इस समस्या से निपटेंगे	क्या करेंगे	कौन करेगा	कब तक (समय अवधि)

गतिविधि 7

1. सहजकर्ता– आपने बहुत मेहनत की है! चूंकि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव हर जगह अलग–अलग होता है, इसलिए समाधान भी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार होने चाहिए।
2. महिलाओं को शामिल करना ना सिर्फ इसलिए जरूरी है क्योंकि वे अधिक संवेदनशील होती हैं, बल्कि वे जलवायु परिवर्तन से निपटने में अहम योगदान भी दे सकती हैं। वे समुदाय की अगुवा बनकर संसाधनों का सही प्रबंधन करने तथा योजना विकसित करने में मदद कर सकती हैं।
3. प्रतिभागियों से निम्नलिखित दो प्रश्न पूछकर उनकी प्रतिक्रिया लें:

   - प्रशिक्षण में उनको सबसे ज्यादा क्या अच्छा लगा?
   - जब वे प्रशिक्षण आयोजित करेंगी, तो वे अन्य महिलाओं के साथ किन विषयों पर चर्चा करने में रुचि रखेंगी?

4. कुछ प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएं लें।
5. इस गीत को पुनः गाकर प्रशिक्षण का समापन करें। इसमें सभी को शामिल करें।

साथ चलेंगे साथी, साथ-साथ चलेंगे
साथ चलेंगे साथी, साथ-साथ चलेंगे
चाँद में सूरज में पश्चिम में पूरब में
साथ चलेंगे साथी, साथ-साथ चलेंगे